तीन चुम्बन-१

लेखक : प्रेम गुरू

प्रिय पाठको,

तो मेरे अज़ीज दोस्तो, आपकी नज़र है मेरी प्रियतमा मिक्की की कहानी ! यह कहानी नहीं मेरी आत्मा की आवाज़ है।

प्रेम आश्रम वाले गुरूजी कहते हैं कि लड़कियों की पिक्की, बाल आने के बाद बुर या भोस, चुदने के बाद चूत और फटने (बच्चा होने) के बाद फुद्दी बन जाती है।

अब मैं यह सोच रहा था कि मिक्की (मोनिका) की अभी पिक्की ही है या बुर बन गई है। इतना तो पक्का है कि भले ही उसकी पिक्की पूरी तरह से बुर या भोस न बनी हो पर वो बनने के लिए जरूर आतुर होगी। पता नहीं इन कमसिन लड़कियों की पिक्की को बुर बनने की इतनी जल्दी क्यों लगी रहती है। और जब बुर बन जाती है तो चूत बनने के लिए बेताब रहती है।

आप सोच रहे होंगे कि ये मिक्की कौन है?

मिक्की मेरे साले की लड़की है। घर में सब उसे मिक्की और सभी सहेलियां मोना और स्कूल में वो मोनिका माथुर के नाम से जानी जाती है। उम्र १८ के आसपास, +२ में पढ़ती है। गदराया बदन शोख, चंचल, चुलबुली, नटखट, नादान, कमसिन, क़यामत। कन्धों तक कटे बाल, सुतवां नाक, पतले पतले गुलाबी होंठ जैसे शहद से भरी दो पंखुडियां,

सुराहीदार गर्दन, बिल्लोरी आँखें, छोटे छोटे नींबू जो अब अमरुद बन गए हैं पतली कमर, चिकनी चिकनी बाहें और केले के पेड़ की तरह चिकनी जांघें। सबसे कमाल की चीज तो उसके छोटे छोटे खरबूजे जैसे नितम्ब हैं।

हे भगवान् … अगर कोई खुदकुशी करने जा रहा हो और उसके नितम्ब देख ले तो एक बार अपना इरादा ही बदलने पर मजबूर हो जाए। उसकी पिक्की या भोस का तो आप और मैं अभी केवल अंदाजा ही लगा सकते हैं। कुल मिला कर वो एक क़यामत है। ऐसी कन्याएं किसी भी अच्छे भले आदमी का घर बर्बाद कर सकती है। पर मुझे क्या पता था कि भगवान् ने इसे मेरे लिए ही बनाया है।

पहले मैं अपने बारे में थोड़ा बता दूं। मेरा नाम प्रेम गुरु है। मैं एक बहु राष्ट्रीय कंपनी में काम करता हूँ। उम्र ३२ साल, कद ५’ ८" रंग गेहुँवा। शक्ल-सूरत ठीक ठाक। वैसे आदमियों की शक्ल-ओ-सूरत पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता, ख़ास बात उसका स्टेटस होता है और दूसरा उसकी सेक्स पॉवर। भगवान् ने मुझे इन दोनों चीजों में मालामाल रखा है। मेरे लिंग का साइज़ ७" है और मोटाई २ इंच। मेरा सुपाड़ा आगे से कुछ पतला है। आप सोच रहे होंगे फिर पतले सुपाड़े से चुदाई का मज़ा ज्यादा नहीं आता होगा तो आप गलत सोच रहे हैं। यह तो भगवान् का आशीर्वाद और नियामत समझिये। गांड मरवाने वाली औरतें ऐसे सुपाड़े को बहुत पसंद करती है। आदमियों को भी अपना लण्ड अन्दर डालने में ज्यादा दिक्कत नहीं होती।

जिन आदमियों के लिंग पर तिल होता है वो बड़े चुद्दकड़ होते है फिर मेरे

तो सुपाड़े पर तिल है आप अंदाजा लगा सकते हैं मैं कितना बड़ा चुद्दकड़ और गांड का दीवाना हूँ। मेरी पत्नी मधुर ३६-२८-३६, उम्र २८ साल बहुत खूबसूरत है। उसे गांड मरवाने के लिए मनाने में मुझे बहुत मिन्नत करनी पड़ती है। लेकिन दोस्तों ये फिर कभी। क्यों कि ये कहानी तो मिक्की के बारे में है।

वैसे तो ये कहानी नहीं बल्कि मेरे अपने जीवन की सच्ची घटना है। दरअसल मैं अपने अनुभव एक डायरी में लिखता था। ये सब उसी में से लिया गया है। हाँ मुख्य पात्रों के नाम और स्थान जरूर बदल दिए हैं। मैं अपनी उसको (?) बदनाम कैसे कर सकता हूँ जो अब इस दुनिया में नहीं है जिसे मैं प्रेम करता हूँ और जन्म जन्मान्तर तक करता रहूँगा। इसे पढ़कर आपको मेरी सच्चाई का अंदाजा हो जायेगा। मेरा दावा है कि मेरी ये आप-बीती आपको गुदगुदाएगी, हँसाएगी, रोमांच से भर देगी और अंत में आपकी आँखे भी जरूर छलछला जायेंगी।

पहला चुम्बन :

मेरी एक फंतासी थी। किसी नाज़ुक कमसिन कली को फूल बनाने की। पिछले ७-८ सालो में मैं लगभग १५-२० लड़कियों और औरतों को चोद चुका हूँ पर अब मैं इन मोटे मोटे नितम्बों और भारी भारी जाँघों वाली औरतों को चोदते चोदते बोर हो गया हूँ। मैंने अपने साथ पढ़ने वाली कई लड़कियों को चोदा है पर वो भी उस समय २०-२१ की तो जरूर रही होंगी। हाँ अपने कामवाली बाई गुलाबो की लड़की अनारकली जरूर १८ के आस पास रही होगी पर वो भी मुझे तब मिली जब उसकी बुर चूत में बदल चुकी थी। सच मानो तो पिछले ३-४ सालों से तो मैं किसी कमसिन

लड़की को चोदने के चक्कर में मरा ही जा रहा था।

शायद आपको मेरी ये बातें अजीब सी लगे- नाजुक कलियों के प्रति मेरी दीवानगी। हमारे गुरूजी कहते हैं चुदी चुदाई लड़कियों/औरतों को चोदने में ज्यादा मुश्किल नहीं होती क्योंकि वे ज्यादा नखरे नहीं करती और चुदवाने में पूरा सहयोग करती है। इन छोटी छोटी नाज़ुक सी लड़कियों को पटाना और चुदाई के लिए तैयार करना सचमुच हिमालय पर्वत पर चढ़ने से भी ज्यादा खतरनाक और मुश्किल काम है।

कहते है भगवान् के घर देर है पर अंधेर नहीं है। मेरा साला किसी कंपनी में मार्केटिंग मैनेजर है। वो अपने काम के चक्कर में हर जगह घूमता रहता है। इस बार वो यहाँ टूर पर आने वाला था। मधु ने उसे अपनी भाभी और मिक्की को भी साथ लाने को मना लिया।

सुबह-सुबह जब मैं उन्हें लेने स्टेशन पर गया तो मिक्की को देख कर मेरा दिल इतना जोर से धड़कने लगा जैसे रेल का इंजन। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा दिल हलक के रास्ते बाहर आ जायेगा। मैंने अपने आप पर बड़ी मुश्किल से काबू किया। सामने एक परी जैसी बिल्लौरी आँखों वाली नाज़ुक सी लड़की कन्धों पर बेबी डोल लटकाए मेरे सामने खड़ी थी - नीले रंग का टॉप और काले रंग की जीन पहने, सिर पर सफ़ेद कैप, स्पोर्ट्स शूज, कानों में छोटी छोटी सोने की बालियाँ, आँखों पर रंगीन चश्मा ? ऊउफ्फ्फ़ … मुझे कत्ल करने का पूरा इरादा लिए हुए।

दोनों जाँघों के बीच जीन पैंट के अन्दर फंसी हुई उसकी उभरी हुई बुर किसी फ़रिश्ते का भी ईमान खराब कर दे ! मुझे लगा कि मेरा पप्पू अपनी निद्रा से जाग कर अंगडाई लेने लगा है। मैं भी कितना उल्लू का पट्ठा हूँ

मिक्की को पहचान ही नहीं पाया। ३-४ साल पहले जब मैं अपनी ससुराल के किसी फंक्शन में जब मैंने उसे देखा था तो उसकी उम्र कोई १३-१४ साल के लगभग रही होगी। मैं भी कितना गधा था इतनी ख़ूबसूरत बला की ओर मेरा ध्यान पहले नहीं गया। मैं तो उसे एक अंगूठा चूसने वाली, इक्कड़ -दुक्कड़, छुपम-छुपाई खेलने वाली साधारण सी लड़की ही समझ रहा था। कितनी जल्दी ये लड़की जवानी पूरी बोम्ब बन गई है। मैं उसे ऊपर से नीचे तक देखता ही रह गया। उसका बदन कितना निखर सा गया था। मैं अभी सोच ही रहा था कि उसकी पिक्की की साइज़ कितनी बड़ी हो गई होगी और उसकी केशर क्यारी बननी शुरू हुई या नहीं मेरा मतलब है की वो अभी पिक्की ही है या बुर बन गई है। पता नहीं उसने अभी तक अपनी पिक्की या बुर से मूतने का ही काम लिया है या कुछ और भी, अचानक मेरे साले की आवाज मेरे कानों में पड़ी।

अरे प्रेम ! कहाँ खो गए भई ?

मैं अपने ख़्वाबों से जैसे जागा। आइये-आइये भाई साहब ! रास्ते में कोई परेशानी तो नहीं हुई? मैंने उनका अभिवादन करते हुए पूछा।

उन्होंने क्या जवाब दिया, मुझे कहाँ ध्यान था, मेरी आँखें तो बस मिक्की पर से हटाने का नाम ही नहीं ले रही थी। ऐसे खूबसूरत मौके का फायदा कौन कम्बख्त नहीं उठाएगा। आप समझ ही गए होंगे मैंने आगे बढ़ते हुए मिक्की को अपनी बाहों में भरते हुए कहा- अरे मिक्की माउस ! तू तो बहुत बड़ी हो गई है।

अपने सीने से लगाए मैंने उसकी गालों और सिर के बालों पर हाथ फिराया। उसके छोटे छोटे अमरुद मेरे सीने से दब रहे थे। उसके नाज़ुक

बदन की कुंवारी खुश्बू मेरे नथुनों में समां गई। मुझे लगा कि मेरे ख़्वाबों की मंजिल मेरे सामने खड़ी है। मेरा दिल तो कर रहा था कि उसका प्यार से एक चुम्बन ले लूँ पर स्टेशन पर उसके माता-पिता के सामने ऐसा करना कहाँ संभव था। न चाहते हुए भी मुझे उस से अलग होना पड़ा लेकिन अलग होते होते मैंने उसके गालों पर एक प्यारी सी थप्पी तो लगा ही दी। फिर मैंने उसका हाथ पकड़ा और हम सभी स्टेशन से बाहर अपनी कार की ओर आ गए।

घर पहुँचने पर मधु ने अपने भैय्या, भाभी और मिक्की का गरमजोशी से स्वागत किया और फिर मिक्की की और बढ़ते हुए कहा,"अरे मोना तू ?" मधु मिक्की को मोना ही बुलाती है, वो उसे अपनी बाहों में लेते हुए बोली।

"नमस्ते बुआजी !" शायद कहीं सितार बजी हो, जलतरंग छिड़ी हो या किसी अमराई में कोयल कूकी हो, इतनी मीठी और सुरीली आवाज मिक्की के सिवा किसकी हो सकती थी।

"अरे ये तो मुझसे भी एक इंच बड़ी हो गई है।" मधु ने कहा।

"हाँ लम्बी तो बहुत हो गई है पर पढ़ाई-लिखाई में अभी भी मन नहीं लगाती !" सुधा ने बुरा सा मुंह बनाते हुए हुए कहा।

"अरे अभी बच्ची है, अपने आप पढ़ लेगी, तुम क्यों चिंता करती हो !" मधु बोली।

मैं सोच रहा था- क्या वाकई ये अभी बच्ची (बची) ही है। उसके स्तन, नितम्ब तो कहर बरपाने वाले बन चुके हैं।

"फूफाजी ! बाथरूम किधर है?" मिक्की ने पूछा।

“आ...न ! हाँ, आओ इधर है !” मैं उसका हाथ पकड़ कर अपने बेडरूम से लगे बाथरूम की ओर ले गया। मैं जानबूझकर उसे गेस्ट रूम के साथ भी एक बाथरूम में नहीं ले गया था।

“मैं साथ आऊँ क्या अन्दर ?” मैंने मुस्कुराते हुए पूछा।

“नहीं ! क्यों ?”

“वो फिर कोई छिपकली आ गई तो ?”

“ओह ! हटो आप भी...” वो शर्माते हुए बाथरूम में घुस गई और दरवाजा बंद कर लिया। और मैं बाहर खड़ा उसके सू-सू की आवाज का इन्तजार करने लगा।

बाहर खड़ा मैं अपने सपनो में खोया हुआ था। आज से कोई ३-४ साल पहले जब मैं अपनी ससुराल किसी फंक्शन में गया था तब की एक घटना मेरी आँखों में फिर से घूम गई।

मेरे ससुराल में घर दो-मंजिला है । ऊपर के भाग में एक कमरा और बाथरूम बना है। मैं शाम को छत के ऊपर टहल रहा था। इतने में मिक्की के चीखने की आवाज सुनाई दी और वो लगभग दौड़ते हुए बाथरूम से बाहर आई, वो थर थर कांप रही थी। इससे पहले कि मैं कुछ समझता उसे ठोकर लगी और वो नीचे गिर पड़ी, मैंने भाग कर उसे उठाया। उसके पैर में चोट लग गई थी, उसकी आँखों में आंसू आ गए।

“अरे क्या हुआ ?”

“वो ! वो !” मिक्की तो कुछ बोल ही नहीं पा रही थी।

“हाँ ! हाँ ! क्या हुआ ?”

“वो ! बाथरूम में छिपकली है !”

मेरी हंसी निकल गई। मिक्की को छिपकलियों से बड़ा डर लगता है। जब वो उठी तो उसके मुंह से कराह सी निकली,“उईई … माँ !”

“क्या हुआ ?”

“मेरे पैर में चोट लग गई है !” उसने अपना घुटना मसलते हुए कहा।

मैंने उसके घुटने पर हाथ फिराया। उसने मिड्डी और टॉप पहना था। मिड्डी में उसकी पुष्ट जांघे तो कमाल की थी। मैं उसकी बुर तो नहीं देख सकता था पर उसके गोरे गोरे घुटनों और जाँघों को देख कर अंदाजा तो लगा ही सकता था कि वो तो पूरी कमायत ही होगी।

मैंने उसका घुटना सहलाया। वो थोड़ा सा छिल गया था, थोड़ा सा खून भी चमकने लगा था।

मैंने कहा, “अब तुम्हें डॉक्टर इंजेक्शन लगायेगा !”

तो वो रोने लगी और बोली,“नहीं मैं इंजेक्शन नहीं लगवाउंगी ! मुझे इंजेक्शन से बड़ा डर लगता है !”

“भई गाँव में तो बस थूक लगा देते हैं पर यहाँ तो ? “ मैंने आगे की बात जानबूझ कर नहीं कही।

“हाँ ये ठीक है ?” मिक्की ने हामी भरी।

मैंने तुंरत उसके घुटने पर अपनी जीभ लगा दी और थोड़ा सा थूक उस पर

लगा कर एक चुम्मा ले लिया। मिक्की खिलखिला कर हंस पड़ी।

“ओह ।। फूफाजी … आप भी …?”

“क्यों क्या हुआ ?”

“कोई घुटनों पर भी पप्पी लेता है ?”

उसने मेरी ओर आश्चर्य से देखा तो मैंने कहा, “अच्छा तो कौन सी जगह पप्पी लेते है?”

‘पप्पी तो गालों पर ली जाती है!” वो मासूमियत से बोली।

“अच्छा ! तो आओ फिर गालों पर भी ले लेते हैं !”

मैं आगे बढ़ा और उसके नरम मुलायम गुलाबी होंटों पर अपने होंठ रख दिए। मैंने धीरे धीरे उसके होंठो को चूमा और फिर अपनी जीभ उन पर फिराने लगा जैसे सावन का प्यासा बारिश की हर बूँद को पी जाना चाहता है, मैं उसके होंठों को चूसने लगा। वह पूरा साथ दे रही थी उसके लिए तो मानो ये एक खेल ही था। मैंने अपनी जीभ उसके मुंह में डालने की कोशिश की तो वो हँसने लगी। मेरा दिल धड़क रहा था। मेरी भावनाओं का उसे इतनी छोटी उम्र में क्या भान होगा वो तो इसे केवल अपने अंकल का प्यार ही समझ रही थी पर मेरे लिए तो यह अमूल्य निधि की तरह था। हमारा यह चुम्बन कोई तीन चार मिनट तो जरूर चला होगा। फिर हम अपने होंठों पर जीभ फेरते हुए अलग हो गए।

मेरे पास उसे गोद में उठाने का सुनहरा अवसर था। मैंने उसे गोद में उठा लिया। उसे भला क्या ऐतराज़ हो सकता था। उसके पैर में तो चोट लगी थी और वो अपने पैरों से चल कर तो नीचे नहीं जा सकती थी। मैं उसे

गोद में उठाये सीढ़ियों से नीचे उतरने लगा। उसने अपनी बाहें मेरे गले में डाल दी और अपनी आँखें बंद करके मेरे सीने पर अपना सिर रख दिया। उसके छोटे-छोटे नींबू मेरे सीने से लगे थे। मैं तो जैसे निहाल ही हो गया। मिक्की को बेड-रूम में छोड़ कर मैं ऊपर आ गया। मेरा पप्पू तो पैन्ट में धमा-चौकड़ी मचा रहा था। अब मेरे पास मुठ मारने के अलावा और क्या रास्ता बचा था। मैंने बाथरूम का दरवाजा बंद कर लिया !! और ????

दोस्तों मिक्की और मेरा यह पहला चुम्बन था। आप सोच रहे होंगे इस चुम्बन लेने में क्या मजा आया होगा। क्या नैतिक और सामाजिक रूप से मुझ जैसे पढ़े लिखे और शरीफ समझे जाने वाले व्यक्ति के लिए ऐसा करना ठीक था ? मैंने क्या गलत किया है मैंने तो एक चतुर भंवरे की तरह एक कच्ची-कलि का रस उसे बिना कोई नुक्सान पहुंचाए पी लिया था। मैंने उसकी कोमल भावनाओं से बिना खिलवाड़ किये एक चुम्बन ही तो लिया है? इसमें इतना हो हल्ला मचाने की क्या जरूरत है। आप शायद अभी मेरी इन बातों को नहीं समझेंगे।

तीन चुम्बन-२

लेखक : प्रेम गुरू

दूसरा चुम्बन :

बाथरूम के बाहर खड़ा मैं आज से कोई चार साल पहले घटी उस घटना के बारे में सोच ही रहा था कि मिक्की की आवाज मेरे कानों के बिलकुल पास में गूंजी।

"फूफाजी कहाँ खोये हुए हो ?" मिक्की शरारत भरी मुस्कान के साथ मुझे

देख रही थी।

मैंने उसके हाथ पकड़ने की कोशिश करते हुए कहा "क्यों आज पप्पी नहीं देनी ?"

वो शर्म से लाल हो गई और मैं रोमांच से लबालब भर गया। मैं उसके गालों पर एक चिकोटी काटी और उसे अपनी ओर खींचने लगा। वो कुनमुनाती हुई सी बोली, "हटो अब मैं बड़ी हो गई हूँ !"

"अरे ! कहाँ से बड़ी हो गई हो, हम भी तो देखे !" मैंने भी शरारत भरे लहजे में कहा।

"वो ! वो.... ओह ! मुझे नहीं पता !" अब तो उसके चेहरे की लाली देखने लायक थी। शर्म से पुरखुमार आँखें नीची झुकी हुई थी। मुझे पूरा यकीन हो गया वो चार साल पुरानी बात को भूली नहीं है।

"तो किसे पता होगा ?" मैंने पूछा।

"मम्मी ऐसा कहती हैं।"

"अरे मम्मी को क्या पता ! तुम तो मेरे लिए अभी भी वो ही छोटी सी मुनिया हो।" मैंने उसकी ठुड्डी को ऊपर उठते हुए कहा। उसकी आंखें बंद थी। मैंने बड़े प्यार से एक चुम्बन उसके गालों पर ले ही लिया।

मेरी आँखें उसकी छोटी छोटी गोलाईयों पर थी जो अब नींबू से बढ़कर अमरुद बन रहे थे। आगे से तीखे नुकीले, जैसे पेंसिल की टिप। उसके मोटे मोटे होंठ तो सुर्ख लाल थे। जीन में कसे हुए उसके नितम्ब ऐसे लग रहे थे मानो दो छोटे छोटे खरबूजे हो उनके बीच की गहरी दरार साफ़

नजर आ रही थी।

गुरूजी कहते हैं किसी जवान लड़की या औरत की बुर या चूत का अंदाजा उसके होंठो को देख कर लगाया जा सकता है। इस हिसाब से तो उसके निचले होंठ भी अब क़यामत बन गए होंगे। या अल्लाह.... !! क्या मैं कभी उनको देख पाऊंगा और.... और.... खैर ये तो अन्दर की नहीं बाद की बात है।

मिक्की हाल में चली गई और मैं बाथरूम में उसकी वोही पुरानी खुशबू लेने अन्दर चला गया। मेरे नथुनों में उसके जवान होते जिस्म की खुशबू भर गई। मैं कोई चार-पाँच मिनट तक आँखें बंद किये पुरानी यादों और नए चुम्बन के ख्यालों में खोया रहा। मैं सोच रहा था कि इस क़यामत को कैसे पटाया जाए। मुझे कुछ कुछ अंदाजा तो हो ही गया था कि वो हमारे पहले चुम्बन को नहीं भूली है। मैं भी कितना गाड़ूँ हूँ इतने दिनों तक मुझे यह ख़याल ही नहीं आया कि मोनिका डार्लिंग अब इतनी बड़ी और रस भरी हो गई है।

१८ साल में ही वो इतनी गदरा जायेगी मुझे अंदाजा नहीं था। मैं शर्त लगा सकता हूँ कि अगर वो अपने होंठों पर लाल रंग की लिपस्टिक लगा ले तो ऐसा लगेगा जैसे वो किसी का खून पीकर आई हो। उसके सुन्दर अमृत कलश हालांकि अभी छोटे ही है पर बिजलियाँ गिराने के लिए काफी हैं। अब ये नींबू की जगह अमरूदों के आकार के तो हो ही गए हैं। उसकी बिल्लौरी आँखें तो ऐसी हैं जैसे नशे में पुरखुमार मस्त हिरणी हो। आप अंदाजा लगा सकते हैं उसकी पिक्की बुर बनने के लिए तड़प रही होगी। अब तो उसने रस बनाना भी शुरू कर दिया होगा। जिस तरह से मेरे

चुम्बन लेने के बाद वो शरमाई थी मुझे पूरा यकीन है की उसका किसी हम उम्र सहेली या मैडम के साथ जरूर कोई चक्कर होगा। और अगर ऐसा है तो मेरे लिए तो ये और भी ख़ुशी की बात होगी कि मेरा प्यार वो जल्दी ही स्वीकार कर लेगी।

आप सोच रहे होंगे क्या बकवास लगा रखी है। क्या सिर फिरी बातें कर रहा हूँ। भला इस उम्र में सेक्स की इतनी समझ आ जाती है। तो दोस्तों सुनो हमारे गुरूजी कहते हैं कि लड़की जब रजस्वला होने लग जाती है और उसकी पिक्की बुर बन जाती है यानि कि उसकी भोस पर बाल आने शुरू हो जाते हैं तो वो सम्भोग के लिए तैयार हो जाती है। ये दोनों चीजें ही उसके सम्भोग के लिए तैयार होने की निशानी हैं।

और मिक्की तो १८ साल की हो गई है। मिक्की के बारे में मुझे बाद में पता चला कि वो अपने मम्मी पापा को कई बार सेक्स करते और चूसा चुसाई करते देख चुकी है और सेक्स के बारे में उसने अपनी सहेलियों से भी बहुत कुछ जानकारियां ले रखी हैं। अकेले में कई बार उसने हस्त मैथुन तो नहीं किया पर अपनी पिक्की से छेड़खानी और छोटी मोटी चुहलबाजी जरूर की है। पर ये सब बातें अभी नहीं।

उस दिन रविवार था मुझे ऑफिस नहीं जाना था। बस मैं तो कोई न कोई बहाना बना कर अपनी मिक्की के पास बना रहना चाहता था। सभी ने चाय पी और नहाने की तैयारी करने लगे। रमेश और सुधा गेस्टरूम से लगे बाथरूम में चले गए। मैंने जानबूझकर मिक्की को अपने बेडरूम से लगे बाथरूम में जाने को कहा। वो अदा से अपने कूल्हे मटकाती हुई बाथरूम चली गई। मैं तो बस उसके ख्यालों में ही खोया रह गया। वो कैसे

अपनी पेंटी उतारेगी ! उसकी कच्छी गुलाबी रंग की होगी या फिर काले रंग की? उसने ब्रा पहन रखी होगी या अभी शमीज से ही काम चला रही है !

अरे यार ! छोड़ो इन फजूल बातों को !

मैं तो बस यही सोच रहा था कि उसकी पिक्की (नहीं बुर नहीं भोस नहीं पुस्सी) कैसी होगी। काश मैं कोई भंवरा होता या कम से कम छिपकली ही होता तो बाथरूम में छुप कर बैठ जाता और अपनी इस नन्ही कली को जी भर कर नंगे नहाते और मूतते हुए देख सकता।

बाथरूम के अन्दर से शावर चलने की आवाज और मिक्की के इंग्लिश गाने की मिलीजुली आवाज मुझे मदहोश कर रही थी। मेरा पप्पू तो छलांगें लगाने लगा था। कोई आधे घंटे के बाद मिक्की बाथरूम से निकली। उफ्फ्फ....!!!

भीगे बाल और उनसे टपकती हुई शबनम जैसी पानी की बूँदें, टांगों से चिपकी लाल सलेक्स और ऊपर ढीली सी शर्ट। पता नहीं उसने पेंटी और ब्रा जानबूझ कर नहीं डाली या कोई और बात थी। सलेक्स इतनी टाइट थी कि उसकी योनि का भूगोल और इतिहास साफ़ नजर आ रहा था। चूत का चीरा तीन इंच से कम तो क्या होगा। मेरा पप्पू तो मस्त हिरण की तरह कुलांचें भरने लगा। उसके बदन से आती मस्त खुशबू से मैं तो मदहोश सा हो गया।

इस से पहले कि कोई मेरी हालत देख कर कोई अंदाजा लगाए, मैं बाथरूम में घुस गया। सबसे पहले मैंने उसकी पेंटी को ढूंढा। एक कोने में किसी मरी हुई चिड़िया की तरह मुझे उसकी नीली पेंटी और ब्रा मिल गए।

मैंने उसकी पेंटी को उठाया और गौर से देखा। योनि-छिद्र वाली जगह कुछ गीली थी और उस पर सफ़ेद लार जैसा कुछ लगा हुआ था। शायद ये उसका योनि-रस था। मैंने उसे नाक के पास लगा कर सूंघा। ईईईइस्स्श....!! इतनी मादक, तीखी, खट्टी, कोरी पुस्सी की महक मेरे तन मन को अन्दर तक भिगो गई। मैंने उस पर अपनी जीभ लगा दी।

आईला....! क्या खट्टा, मीठा, नमकीन, कच्चे नारियल जैसा स्वाद था। मैंने उसकी पेंटी और ब्रा को एक बार और सूंघा और फिर उसकी पेंटी को अपने 7" के पत्थर की तरह अकड़े पप्पू के चारों और लिपटा कर शीशे में देखा। पप्पू तो अड़ियल टट्टू ही बन गया था जैसे मार खाए बिना आज नहीं मानेगा। जी तो कर रहा था कि एक बार मुठ मार लूँ। पर मैं तो अपना प्रेम रस आज रात के लिए बचा कर रखना चाहता था। मैंने उसकी पेंटी को अपनी पेंट की जेब में रख लिया अपने प्यार की निशानी मानकर।

जब मैं फ्रेश होकर बाहर आया तो सभी मेरा खाने की मेज़ पर इंतजार कर रहे थे। नाश्ता करने के बाद रमेश मार्केट और मधु और सुधा हमारे बेडरूम में गप्प लगाने चली गई। मैं और मिक्की अब दोनों अकेले रह गए। जैसे ही मधु और सुधा गई मिक्की झट से उठ कर मेरे पास सोफे पर बैठ गई और मेरी आँखों में झांकते हुए बोली,"जिज्जू ! क्या आप मुझे कंप्यूटर सिखा सकते हो ?"

जिज्जू..... ? आप चौंक गए ना !

ओह....!

मैं बताना ही भूल गया ! मिक्की जब मुझे फूफाजी बुलाती तो मुझे लगता

कि मैं कुछ बूढा हो गया हूँ। मैं अपने आप को बूढा नहीं कहलवाना चाहता था तो हमारे बीच ये तय हुआ घरवालों के सामने वो मुझे फूफाजी कह सकती है पर अकेले में या घर के बाहर जीजाजी कहकर बुलाएगी।

"ओह.... येस....येस....! हाँ हाँ ! क्यों नहीं !" मैं हकलाता हुआ सा बोला क्योंकि मेरी निगाहें तो उसके स्तनों पर थी। पतले शर्ट में उसके बूब्स की छोटी छोटी घुन्डियाँ चने के दाने की तरह साफ़ नजर आ रही थी।

"चलो स्टडी-रूम में चलते हैं !" मैं उसकी कमर में हाथ डाल कर उसे स्टडी-रूम की ओर ले जाने लगा।

उसकी लम्बाई मेरे कन्धों से थोड़ी ही ऊपर थी। उसके नाजुक बदन की कुंवारी खुशबू और चिकना स्पर्श मुझे मदहोश किये जा रहा था। मैं तो उसके साथ चूमने चिपटने का कोई न कोई बहाना ढूंढ ही रहा था। उसे भी कोई परवाह नहीं थी। इस उम्र में इन बातों की परवाह वैसे भी नहीं की जाती। मैं तो बस किसी तरह उसे चोदना चाहता था। पर ये इतना जल्दी कहाँ संभव था। खैर मुझे भी कोई जल्दी नहीं थी।

मेरे मस्तिष्क में कई योजनाएँ घूम रही थी। एक प्लान तो मैं काफी देर से सोच रहा था। मिक्की को कोल्ड ड्रिंक्स और फ्रूटी पीने का बहुत शौक है उसमें नींद की गोलियाँ डाल दी जाएँ और रात में ? पर घर में इतने सब मेहमानों के होते यह प्लान थोड़ा मुश्किल था। काश कुछ ऐसा हो कि मैं और सिर्फ मेरी प्यारी मिक्की डार्लिंग अकेले हों, हमें डिस्टर्ब करने वाला कोई नहीं हो। काश किसी टापू या महल में हम दोनों अकेले हों और नंगधड़ंग बिना रोकटोक घूमते रहें। काश इस शहर में कोई जलजला या तूफ़ान ही आ जाए सब कुछ उजड़ जाए और बस हम दोनों ही अकेले रह

जाए.... ओह्ह्ह्ह्.... पर यह कहाँ संभव है ....!

खैर कोई न कोई रास्ता तो भगवान् जरूर निकालेगा।

मैं मिक्की को अपनी बाहों में लिए स्टडी रूम में आ गया जिसमे मैंने कंप्यूटर, प्रिंटर और अपनी बहुत सी फाइल्स और पुस्तकें रखी हुई हैं। स्टडी-रूम में सामने की दीवार पर एक सीनरी लगी है जिसमें एक तेरह-चौदह साल की बिल्लौरी आँखों वाली लड़की तितली पकड़ रही है, बिलकुल मिक्की जैसी।

मिक्की ने गौर से पेंटिंग को देखा पर कोई कमेन्ट नहीं किया। मैंने उसे कन्धों से पकड़ते हुए अपने साथ वाली कुर्सी पर इस तरीके से बैठाया कि मेरे हाथ उसके उरोजों को छू गए।

वाह ! क्या मस्त चिकना अहसास था !

स्टडी-रूम में आने के बाद मैंने उसे कंप्यूटर के बारे में बताना शुरू किया। वो थोड़ा-बहुत कंप्यूटर के बारे में पहले से जानती थी। सबसे पहले उसे कंप्यूटर चालू करने ओपरेट करने और बंद करने के बारे में बताया। जब स्क्रीन ऑन हुई तो पासवर्ड डालना बताया। मैंने उसे ये पासवर्ड याद रखने के लिए बोला ताकि जब वो इस पर प्रेक्टिस करे तो कोई परेशानी न हो। वो सारी बातें एक कागज़ पर लिखती जा रही थी। फिर मैंने उसे इन्टरनेट और ई-मेल आदि के बारे में भी बताया। फाइल्स खोलना और देखना भी उसे समझाया। हमें कोई एक घण्टा तो इस चक्कर में लग ही गया।

ऐसा नहीं है कि मैं उसे सिर्फ कंप्यूटर ही समझा रहा था। मैंने तो उसके

हाथ, गाल, कंधे, होंठ, सिर के बाल और बूब्स को छूने और दबाने का कोई मौका नहीं छोड़ा। कई बार तो मैंने उसकी जाँघों पर भी हाथ साफ़ किया, वो कुछ नहीं बोली। एक दो बार तो मैंने उसके गालों पर प्यार भरी चपत भी लगा दी। मेरे लतीफों से तो वो हंसते हंसते उछल ही पड़ती थी।

एक बार जब उसने अपना एक हाथ ऊपर किया तो उसकी ढीले शर्ट के अन्दर कांख में उगे छोटे छोटे सुनहरे रेशम से रोएँ नजर आ ही गए। हे भगवान् ! उसकी बुर पर भी ऐसी ही सुनहरी केशर-क्यारी बन गई होगी। उसकी थोड़ी खुली और ढीली शर्ट में कैद छोटे छोटे चीकू ? अमरुद? संतरे ? मुझे नजर आ ही गए। उनके उपर मूंग के दाने जितने चूचुक और अट्ठन्नी के आकार का गुलाबी रंग का एरोला।

मेरी आँखें तो फटी की फटी ही रह गई।

मेरा पप्पू तो अब पैन्ट के अन्दर घमासान मचाने पर तुला हुआ था। मुझे लगा कि आज ये मार खाए बिना नहीं मानेगा। मैंने जल्दी से एक किताब अपनी गोद में रख ली। एक दो बार तो मैंने उसकी जांघों पर हाथ रखने के बहाने उसकी पुस्सी को भी टच कर दिया। पता नहीं वो मेरे मन के अन्दर की बात जानती होगी या नहीं ? हाँ मैंने देखा कि उसकी पिक्की के सामने वाला हिस्सा कुछ फूल सा गया है और पिक्की के छेद वाली जगह एक रुपये के सिक्के जितनी जगह गीली हो गई है।

हमें कंप्यूटर पर बैठे हुए डेढ़ दो घंटे तो हो ही गए थे। मैं भी निरा बेवकूफ हूँ इस डेढ़ दो घंटे में मतलब की बात तो भूल ही गया। अचानक मेरे दिमाग में एक प्लान घूम गया और मेरी आँखें तो नए प्लान के बारे में सोच कर चमक ही उठी।

आप जानते होंगे कि अगर किसी चीज को देखने या जानने के लिए मना किया जाए तो उस चीज के प्रति उत्सुकता ज्यादा बढ़ जाती है, ख़ास कर छोटे बच्चों में। और मिक्की भले ही मेरी नजरों में जवान मस्त प्रेमिका हो लेकिन थी तो अभी बच्ची ही। मैंने कुछ हिरोइनों की नंगी फोटो, पिक्चर, फिल्म्स और अन्तर्वासना की कहानियाँ एक फोल्डर में सेव कर रखी हैं। इस से अच्छा मौका और क्या हो सकता था मैंने बातो बातों में उस फोल्डर और फाइल्स का पासवर्ड हटा दिया। अब मैंने मिक्की से कहा- तुम इस फोल्डर को मत खोलना !

"क्यों ऐसा क्या है इसमें ?" मिक्की ने हैरानी से पूछा।

"अरे, इसमें डरावनी फोटो हैं, तुम डर जाओगी !"

"क्या जंगली छिपकलियाँ हैं ?"

मैं जानता था उसे छिपकलियों से बहुत डर लगता है।

मैंने कहा,"हाँ हाँ ! ना ! असली छिपकलियाँ नहीं, पर वैसी ही है !"

मैं अपने मकसद में कामयाब हो चुका था। मैंने कंप्यूटर ऑफ करते समय कनखियों से देखा था कि मिक्की ने पेंसिल से फोल्डर का नाम नोट कर लिया है। हे भगवान् ! तेरा लाख लाख शुक्र है। मेरा दिल बल्लियों उछलने लगा अब मंजिल नजदीक आ गई है।

शाम के चार बज चुके थे। मधु ने कहा मिक्की को बाजार घुमा लाओ। मैं और मिक्की बाजार जाने की तैयारी करने लगे। मुझे तो क्या तैयारी करनी थी मिक्की ने जरूर अपने कपड़े बदल लिए। हलके पिस्ता रंग की टी-शर्ट और सफ़ेद जीन मेरे कत्ल का पूरा इंतजाम किया था उसने। आप

तो जानते है जीन पहने गोल गोल कूल्हे मटकाती लड़कियां मेरी सबसे बड़ी कमजोरी है।

हम लोग मोटरसाइकल पर बाजार के लिए निकल पड़े। मैंने उसे यहाँ का किला, गणेशस्थान मंदिर और लोहागढ़ फोर्ट आदि दिखाया। हमने एक रेस्तरां में पिज्जा और मटके वाली कुल्फी भी खाई। कुल्फी खाते हुए मैंने उसे मजाक में कहा कि इसे पूरा मुंह में लेकर चूसो बहुत मजा आएगा। मैं तो बस ये देखना चाहता था कि उसे अंगूठे के अलावा भी कुछ चूसना आता है या नहीं। एक स्टाल पर हमने गोलगप्पे भी खाए। गोलगप्पों का साइज़ थोड़ा बड़ा था। जिस अंदाज में पूरा मुंह खोलकर वो गोलगप्पे खा रही थी मैं तो बस यही अंदाजा लगा रहा था कि अगर मेरा डेढ़ इंच मोटा लण्ड ये मुंह में ले ले तो कोई परेशानी नहीं होगी।

आते समय हमने चॉकलेट के चार-पाँच पैकेट, चुइंगम के दो पैकेट, वीडियो गेम्स की सीडी, २ कॉमिक्स, एक रिस्ट वाच, नाइके की एक टोपी और न जाने क्या क्या अल्लम-गल्लम चीजें खरीदी। मैं तो आज उसे तोहफों से लाद देना और हर तरीके से खुश कर देना चाहता था।

हाँ ! एक खास बात- मिक्की के लिए मैंने दो फोम वाली पेंटीज, पैडेड ब्रा और एक झीनी सी नाइटी भी खरीदी। मैंने उसे समझाया कि इसके बारे में अपनी बुआजी या मम्मी से न बताये। उसने मेरी और प्रश्नवाचक निगाहों से देखा पर बोली कुछ नहीं और हाँ में सिर हिला दिया।

मैंने जब उससे कहा कि ये पहनकर भी मुझे दिखानी होगी तो उसने मेरी ओर भोलेपन से देखा पर जब बात का मतलब उसके समझ में आया तो वो शरमा गई। ईईश्श....ss

हायss .... इस अदा पर कौन न मर जाये ए खुदा !

मैंने उस से कहा, "देखो मैंने तुम्हारे लिए कितने गिफ्ट खरीदे हैं तुम मुझे क्या गिफ्ट दोगी ?"

तो वो बड़े ही भोले अंदाज में बोली "मेरे पास क्या है गिफ्ट देने के लिए ?"

मैंने अपने मन में कहा, "अरे तुम्हारे पास तो कारूं का खजाना है मेरी बुलबुल !"

पर फिर मैंने कहा "अगर चाहो तो कोई न कोई गिफ्ट तो दे ही सकती हो !"

वो सोच में पड़ गई, फिर बोली "अच्छा एक गिफ्ट है मेरे पास, पर पता नहीं आपको पसंद आएगा या नहीं?"

"क्या है ? प्लीज बताओ न ?" उसने अपनी जेब से एक रेशमी रुमाल निकाला और बोली, "मेरे पास तो देने को बस यही है।"

"पता है यह रुमाल मैंने पिछले साल आगरा से खरीदा था ?"

"अरे कहीं इस से नाक तो नहीं साफ़ की है ?" मैंने हंसते हुए कहा "नहीं तो पर....! हाँ ! जब मैं मटके वाली कुल्फी चूस रही थी मैंने अपने होंठ जरूर साफ़ किये थे" उसने बड़ी मासूमियत से कहा। मैं तो इस अदा पर दिलो जान से फ़िदा हो गया, मर ही मिटा। मैंने उसके हाथ से रुमाल लेकर उसे चूम लिया। मिक्की जोर से शरमा गई पता नहीं क्यों ?

घर आते समय रास्ते में मैंने उसे बताया कि कल हम सभी लिंग महादेव का मंदिर देखने चलेंगे। शहर से १५-१६ किलोमीटर की दूरी पर एक छोटी

सी पहाड़ी पर यह शिव मंदिर है जिसमे पाँच फुट का शिवलिंग बना हुआ है। यहाँ मान्यता है कि कोई पैदल नंगे पाँव आकर शिवलिंग पर सोलह सोमवार कच्चा दूध चढ़ाये तो उसकी मनोकामनाएं पूरी हो जाती है। मैंने कभी इसे आजमाया नहीं था पर अब मेरा मन कर रहा था कि एक बार यह टोटका भी आजमा कर देख ही लूँ पर १६ सोमवार यानी ४-५ महीने....। यार थोड़ा कम नहीं हो सकता ?

इन बातों से दूर मिक्की तो मेरी बात सुनकर झूम ही उठी। उसकी आँखों की चमक तो देखने लायक थी। लेकिन फिर उसने थोड़ी मायूसी से पूछा,"क्या आप कल ऑफिस नहीं जाओगे?"

"अरे मेरी बिल्लो रानी तुम्हारे लिए छुट्टी ले लेंगे तुम क्यों चिंता करती हो" मैंने उसके गालों को सहलाते हुए कहा। वो शरमा गई। उसके गाल अचानक लाल हो गए और उसने रस भरी आवाज और कातिलाना अंदाज में कहा,"थैंक यू मेरे प्यारे फ़ूssफा.... अर्ररर जीss जा जीss ईईस्स्स्सश्श

आज अगर इसी क्षण मृत्यु भी आ जाये तो कोई गम नहीं।

जब हम घर पहुंचे तो वहाँ बम फूट चुका था। रमेश अपने मार्केटिंग के काम से वापस आ गया था। उसने बताया कि सुधा के चाचा का एक्सीडेंट हो गया है और उन्हें आज ही दिल्ली जाना होगा। खबर सुनकर मेरा तो दिल ही बैठ गया। हे भगवान्। मिक्की ने जब सुना तो वो भी उदास हो गई। उसके चेहरे से लगता था कि वो अभी रो पड़ेगी।

"प्रेम हमें आज रात ही निकलना होगा। क्या दिल्ली के लिए अभी कोई ट्रेन है ? रमेश ने पूछा।

"हाँ ट्रेन तो है रात दस बजे पर... रिज़र्वेशन?"

"कोई बात नहीं मैनेज कर लेंगे। अरे सुधा, जल्दी करो, सामान देख लो ! मिक्की कहाँ है ?" रमेश ने सुधा को आवाज दी।

"भाई साहब क्या सुबह नहीं जा सकते ?" मैंने पूछा।

"अरे यार सुधा और मेरा जाना बहुत जरूरी है !"

मुझे थोड़ी सी आशा बंधी मैंने कहा "पर मिक्की तो यहाँ रह सकती है ?"

"वो अकेली यहाँ क्या करेगी ?"

"बच्ची है पहली बार आई है थोड़ा घूम फिर लेगी वापस लौटते समय आप उसे भी साथ ले जाना !" मैंने कहा।

"चलो ठीक है !"

रमेश गेस्टरूम की ओर चला गया जहां सुधा और मधु बैठी थी। मैं भागता हुआ अपने बेडरूम में गया मैंने देखा मिक्की बेड पर ओंधे मुंह लेटी रो रही है। हे भगवान् क्या कयामत के गोल गोल नितम्ब थे। मैंने उसकी जाँघों और नितम्बों पर हाथ फेरा और उसे प्यार से आवाज दी,"अरे मिक्की माउस ! क्या हुआ ?"

"जिज्जू मैं मम्मी-पापा के साथ नहीं जाना चाहती ! प्लीज मम्मी पापा को मना लो ! प्लीज जिज्जू !" उसने लगभग रोते हुए कहा।

"अच्छा ! चलो, पहले अपने आंसू पौंछो ! शाबास ! गुड गर्ल ! अच्छे बच्चे रोते नहीं हैं !" मैंने उसके गालों पर हाथ फेरते हुए कहा। इतना बढ़िया मौका मैं भला कैसे छोड़ सकता था।

"क्या पापा मान जायेंगे ?"

"तुम चिंता मत करो मैंने उन्हें मना लिया है !"

"ओह मेरे अच्छे जिज्जू !"

मिक्की यकायक मुझसे लिपट गई और उसने मेरे गालों पर चूम लिया। मैं तो अवसर की तलाश में था !

मैंने झटसे मिक्की को अपनी बाहों मे जकड़ लिया और अपने लब उसके गुलाबी लबों से मिला दिए। मेरे दोनों हाथ उसकी पीठ पर थे और मेरी जीभ उसके होठों के बीच में अपना रास्ता तलाशते तलाशते उसकी जीभ से जा मिली।

कुछ पलों के लिए तो मैं अपनी सुधबुध ही खो बैठा और शायद वो भी !

लेकिन मिक्की होश में आई और अपने आप को मुझसे छुड़ा कर मेरे गाल पर एक चुम्बन ले कर बाथरूम में भाग गई अपना मुंह धोने। ये सब बहुत जल्दी और अप्रत्याशित हुआ था। मैंने अपने गालों को दो तीन बार उसी जगह सहलाया और फिर अपनी अंगुलियों को चूम लिया।

तो दोस्तो, यह था हमारा दूसरा चुम्बन !

तीन चुम्बन-३

लेखक : प्रेम गुरू

रति-द्वार दर्शन :

जब मैं रमेश और सुधा को स्टेशन छोड़ कर वापस आया तो लगभग साढ़े

ग्यारह बज चुके थे। मिक्की गेस्टरूम में सो चुकी थी। मैंने उस रात मधु को दो बार कस कस कर चोदा और एक बार उसकी गांड भी मारी। आज जिस तरीके से मैंने मधु को रगड़ा था मुझे नहीं लगता वो अगले दो दिनों तक ठीक से चल फिर पाएगी।

आज मेरा उतावलापन और बेकरारी देखकर मधु आखिर बोल ही पड़ी, "आज आपको क्या हो गया है ? मुझे मार ही डालोगे क्या ? कहीं आप नशा तो नहीं कर आये हो।"

अब मैं उसे क्या बताता कि मैं तो मिक्की के नशे में अन्दर तक डूबा हुआ हूँ। मैं तो बस इतना ही बोल पाया आज तुम बहुत खूबसूरत लग रही हो मेरी जान और तीन चार चुम्बन उसके गालों पर ले लिए तो वो बोली- उन्हहह.... हटो परे झूठे कहीं के.... !हम लोगो को रात को सोने में दो बज गए थे।

रात के घमासान के बाद सुबह उठाने में देर तो होनी ही थी। मैं कोई आठ बजे उठा। मधु पहले ही उठ चुकी थी। मधु ने मुझे जगाया और उलाहना देते हुए बोली- रात में तो तुमने मेरी कमर ही तोड़ डाली।

मैंने उसे फिर बाहों में भरने कि कोशिश की तो अपना हाथ छुड़ाते हुए बोली "सुबह सुबह छेड़खानी नहीं ! जाओ मोना को जगा दो ! मैं चाय बनाती हूँ "

मैं बाथरूम से फ्रेश होकर गेस्ट रूम में गया जहां मिक्की सोई हुई थी। मिक्की अभी भी बेसुध पड़ी सो रही थी। उसने अपना अंगूठा मुंह में ले रखा था और दूसरे हाथ से बेबी डॉल को सीने से चिपका रखा था। बालों की एक आवारा लट उसके गालों पर बिखरी पड़ी थी। जिस अंदाज में वो

सोई थी मुझे लगा कि वो अभी निरी मासूम बच्ची ही है। मुझ जैसे पढ़े लिखे आदमी के लिए ऐसी भावनाए रखना कदापि उचित नहीं है।

पर मेरा ये ख़याल अगले ही पल हवा में काफूर हो गया। उसने फूलोंवाली फ़्रॉक और गुलाबी रंग की पेंटी पहन रखी थी। वो करवट लेकर लेटी हुई थी। एक टांग थोड़ी सी ऊपर की ओर मुड़ी हुई। उसकी पुष्ट जाँघों को देखकर तो लगा जैसे वो कोई हॉकी की खिलाड़ी हो। पेंटी के अन्दर कसी हुई उसकी बुर एकदम फूली हुई थी। रोम विहीन टाँगे घुटनों से ऊपर उठी उसकी फ़्रॉक से झांकती हुई उसकी जाँघों की रंगत तो शरीर के दूसरे हिस्सों से कहीं ज्यादा गोरी थी। मैं तो बेसाख्ता आँखें फाड़े उस रूप की देवी को देखता ही रह गया। मेरा पप्पू तो बेकाबू होने लगा।

मैं सोच रहा था कि उसे जगाने के लिए उसकी संगमरमरी जाँघों पर हाथ फेरूँ या नितम्बों पर जोर की थप्पी लगाऊं या उसके गालों पर एक पप्पी लेकर उसे जगाऊं। धड़कते दिल से मैंने अपना एक हाथ और मुंह उसकी जाँघों की ओर बढाया ही था कि पीछे से मधु की आवाज आई,"अरे मोना अभी उठी नहीं ? ऑफ।। ये लड़की भी कितना सोती है ?"

मैं तो इस अप्रत्याशित आवाज से हड़बड़ा ही गया। मुझे तो ऐसा लगा जैसे मेरा सारा खून रगों में जम ही गया है। आज तो मेरी चोरी पकड़ी गई है। पता नहीं मेरे मुंह से कैसे निकल गया।

"हाँ हाँ उठ ही रही है !"

मुझे लगा अगर मैंने मधु की ओर देखा तो जरूर वो जान जायेगी और मुझे जिन्दा नहीं छोड़ेगी मैं तो कहीं का नहीं रहूँगा। पर भगवान् का लाख लाख शुक्र है वो रसोई में चली गई थी। अगर एक दो सेकंड की भी देरी हो

जाती तो ??

सोच कर मैं तो सूखे पत्ते की तरह काँप गया।

मैं तो तब चौंका जब मिक्की ने आँखे मलते हुए कहा,"गुड-मोर्निंग फूफाजी !"

मैं भला क्या कहता। मिक्की बाथरूम में चली गई। मेरी हालत तो उस निराश शिकारी की तरह हो रही थी जिसके हाथ में आया हुआ शिकार छूट गया हो। मैं बाहर लॉन में पड़ी चेयर पर बैठ कर अखबार पढ़ने लगा।

गर्मियों की छुटियाँ चल रही थी इसलिए मधु को तो वैसे ही स्कूल नहीं जाना था (मधु बच्चों के एक स्कूल में डांस टीचर है) और मैंने आज बंक मारने का इरादा पहले ही कर लिया था वैसे भी आज बुद्ध पूर्णिमा की छुट्टी थी। मैं चाहता था कि मिक्की और मधु पहले नहा धो लें, मैं तो आराम से नहाना चाहता था। मुझे आज अपने पप्पू का मुंडन भी करना था। आप तो जानते ही है मधु को लंड और चूत पर झांटे बिलकुल अच्छी नहीं लगती। उसने कल रात भी उलाहना दिया था। पर मैं तो कुछ इससे आगे भी सोच रहा था। क्या पता कब किस्मत मेरे ऊपर निहाल हो जाये और मेरी मोनिका डार्लिंग मेरी बाहों में आये तो मैं एक हैंडसम चिकने आशिक की तरह लगूं। वैसे एक कारण और भी था। गुरूजी कहते है झांटों की सफाई करने के बाद लंड और चूत दोनों की सुन्दरता बढ़ जाती है और लंड का आकार बड़ा और चूत का छोटा नजर आने लगता है। वैसे तो ये नज़र का धोखा ही है पर चलो इस खुशफहमी में बुरा भी क्या है।

खैर कोई बारह-साढ़े बारह बजे मैं नहा धोकर फारिग हुआ। मिक्की स्टडी रूम से बाहर आ रही थी। उसकी नज़रें झुकी हुई थी और साँसे उखड़ी हुई

माथे पर पसीना। वो मुझसे नज़रें नहीं मिला रही थी। वो मेरी और देखे बिना मधु के पास रसोई में चली गई। पहले तो मैं कुछ समझा नहीं पर बाद में मेरी तो बांछें ही खिल गई। ओह मिक्की डार्लिंग ने जरूर वो ही 'जंगली छिपकलियों' वाला फोल्डर और फाइल्स देखी होंगी। थैंक गॉड। आईला....। मेरा दिल किया कि जोर से पुकारूं - मोनिका.... ओ।।। माई।। । डार्लिंग"।

कोई आधे घंटे बाद मिक्की नाश्ता लेकर आई। उसकी नज़रें अभी भी झुकी हुई थी। ऊपर से वो सामान्य बनने की कोशिश कर रही थी।

मैंने उसे पूछा,"क्या बात है ?"

तो वो बोली "कुछ नहीं आआन्न.... वो....। वो हम मंदिर कब चलेंगे ?"

मैंने उसके चहरे की और गौर से देखते हुए कहा,"शाम को चलेंगे अभी तो बहुत गरमी है !"

आज कामवाली बाई गुलाबो नहीं उसकी लड़की अनारकली आई थी। मैं सोफे पर बैठा टीवी देख रहा था। जब मिक्की रसोई में जा रही थी तो अनारकली उधर देखते हुए मेरे पास आकर फुसफुसाने वाले अंदाज में आँखें मटकते हुए बोली "ये चिकनी लोंडिया कौन है ?"

मैंने उसके दोनों संतोरों को जोर से दबाते हुए कहा "क्यों लाल मिर्च से जल गई क्या ?"

"जले मेरी जूती !" पैर पटकते हुए वो अपना मुंह फुलाते हुए वो अन्दर चली गई।

आप चौंक गए न ? मैं आपको बताना भूल गया कि अनु हमारे यहाँ काम

करनेवाली बाई गुलाबो की लड़की है जिसे मैं कई बार चोद चुका हूँ और उसकी गांड भी मार चुका हूँ। वो तो समझती है कि सारी खुदाई छोड़ कर मैं तो बस उस पर ही मोर हूँ। उसे हम भंवरों की कैफियत का क्या गुमान। वैसे भी भगवान् ने औरतों को दूसरी किसी भी सुन्दर औरत के लिए ईर्ष्यालू बनाया ही है तो इसमें बेचारी अनारकली का क्या दोष है।

शाम को कोई चार बजे मैं और मिक्की लिंग महादेव मंदिर पर जाने के लिए तैयार हो गए। मधु ने वो ही कमर दर्द का बहाना बनाया और साथ नहीं गई। मैं इस कमर दर्द का मतलब अच्छी तरह जानता था। मिक्की को जब ये पता चला कि बुआजी साथ नहीं जा रही तो वो बहुत खुश हुई पता नहीं क्यों। दो जनो के लिए तो कार की जगह बाइक ही ठीक थी।

मिक्की ने सफ़ेद पैन्ट और गहरे बादामी रंग और फूलों वाला एक ओर से झूलता हुआ कुर्ता पहन रखा था। सिर पर वोही नाइके वाली टोपी, कलाई में रिस्ट वॉच । मैं तो अभी ये सोच ही रहा था कि मिक्की ने जरूर वोही पेंटी और पैडेड ब्रा भी पहनी होगी जो कल शाम हमने खरीदी थी। पैडेड ब्रा के कारण उसके बूब्स की साइज़ ३४ तो जरूर लग रही थी। होंठों पर हलकी सी लाल लिपस्टिक। आज मैंने भी अपनी काली जीन और पसंदीदा टी-शर्ट पहनी थी। इम्पोर्टेड परफ्यूम स्पोर्ट्स शूज और नाइके की टोपी।

"बिल्लो रानी कहो तो अभी जान दे दूँ...." मैं मस्ती से गुनगुनाता जब बाहर आया तो मिक्की ने मुझे घूर कर ऊपर से नीचे तक देखा। फिर एक आँख मारते हुए बोली "ओये होए ! क्या बात है ! आज तो बड़े जच रहे हो? किसी को कत्ल करना है क्या ?" मैं क्या बोलता।

"अच्छा बताओ मैं कैसी लग रही हूँ ?" मिक्की ने आँखे नचाते हुए कहा।

"बिलकुल बंदरिया लग रही हो" मैंने उसे चिढ़ाने के अंदाज में कहा तो उसने अपना मुंह फुला लिया। मेरा इरादा उसे नाराज़ करने का कतई नहीं था। मैं तो उसे सपने में भी नाराज करने की नहीं सोच सकता। मैंने उसके गालो पर थप्पी लगाते हुए कहा "बिलकुल हंसिका मोटवानी और करीना कपूर लग रही हो ! सच में !"

"परे हटो।। हुंह झूठे कहीं के ? " जिस अदा से उसने ये कहा था मुझे मधु का रात वाला डायलॉग याद आ गया। इसी लिए तो कहते है कई चीजें वंशानुगत भी होती हैं।

मिक्की मोटर साइकल पर मेरे पीछे चिपक कर बैठी हुई थी उसका एक हाथ मेरी कमर को नाभि के थोड़ा नीचे कस कर पकड़े हुए था। उसने अपना सिर मेरे कंधे पर रखा था और एक हाथ गले में डाल रखा था। जिस तरीके से वो मेरे साथ चिपक कर बैठी थी मुझे नहीं लगता मिक्की अब छोटी बच्ची रह गई है। उसकी गोलाइयां मेरी पीठ पर आसानी से महसूस हो रही थी। आज उसने भी शायद अपनी बुआजी की ड्रेसिंग टेबिल का पूरा फायदा उठाया था। पिछले जन्मदिन पर जो इम्पोर्टेड परफ्यूम मैंने मधु को गिफ्ट दिया था उसकी महक भला मैं कैसे नहीं पहचानता। मैं तो इतना मदहोश हो रहा था कि मुझे लगने लगा कहीं मैं कोई एक्सीडेंट ही कर बैठूंगा।

जहां से पहाड़ी पर मंदिर के लिए रास्ता शुरू होता है श्रद्धालु नंगे पैर ही ऊपर पैदल जाते है। मोटरसाइकल स्टैंड पर खड़ी करने और जूते उतारने के बाद मैंने मिक्की को बताया ऊपर पीने का साफ़ पानी नहीं मिलेगा

अगर पीना है तो यही पी लो। मिक्की पानी की पूरी एक बोतल डकार गई और मैंने जानबूझ कर उसे बाद मैं फ़्रूटी के २-३ पाउच और पिला दिए। आप इतने भी कम अक्ल नहीं है कि मेरी इस चाल को न समझ रहे हो। पर मिक्की इन सब बातों से परे कुछ और खाने पीने की फिराक में थी। हमने प्रसाद के साथ कुछ स्नेक्स, मिठाइयां और बंदरों के लिए भुने हुए चने लेने के बाद मंदिर के लिए चढ़ाई शुरू कर दी। मंदिर की दूरी यहाँ से कोई दो किलोमीटर है।

आज सोमवार का दिन था पर भीड़ कोई ज्यादा नहीं थी कोई इक्के दुक्के ही श्रद्धालु थे क्योंकि लोग सुबह सुबह दर्शन करके चले जाते है। हमारे जैसे प्यार के परवाने अपनी शमा के साथ शाम को ही आते है। दर्शन करने और कच्चा दूध-जल चढाने के बाद जब हम मुख्य मंदिर से बाहर आये तो मैंने मिक्की से पुछा तुमने क्या मन्नत माँगी तो वो कुछ सोचने लगी और फिर बोली,"नहीं ! पहले आप बताओ !"

मेरे जी में आया साफ़ कह दूं कि मैंने तो बस तुझे ही माँगा है पर ये कहना इतना आसान भी नहीं था मेरे दोस्तों और दोस्तानियो ! मैंने घुमा फिरा कर कहा,"जो तुमने माँगा, वो ही मैंने मांग लिया !"

"क्या.... ? आपने भी ? मतलब.... याने ....? ओह !! ?" वो आश्चर्य से मेरा मुंह देख रही थी जैसे मैंने उसकी कोई शरारत या चोरी पकड़ ली हो। जब उसे अपनी बात समझ आई तो शर्म से दोहरी गई। मैं तो निहाल ही हो गया।

मंदिर के पीछे थोड़ा खुला आँगन सा है जहां पर तीन तरफ दो दो फ़ुट की दीवार बनी है नीचे गहरी खाई और झाड़ झंखाड़ है। यहाँ काले मुंह वाले

लंगूर बहुत है जो पेड़ों पर उछल कूद मचाते रहते हैं, आने वाले श्रद्धालु उन्हें भुने हुए चने, केले आदि डाल देते हैं। बच्चो का तो ये मनपसंद खेल होता है। फिर मिक्की भी तो अभी बच्ची ही थी ऐसा मौका वो भला क्यों छोड़ती। उसने भी बंदरों को चने डालने शुरू कर दिए। हम लोग एक कोने में खड़े थे। थोड़ी दूर दूसरे कोने में एक नवविवाहित जोड़ा अपनी गुटरगूं में व्यस्त था। लड़का शायद उसका चुम्बन लेना चाहता था पर लड़की शर्म के मारे उसे मना कर रही थी। मैंने देखा मिक्की बड़े गौर से उनको देख रही है। मैं चुप रहा। थोड़ी देर बाद वो दोनों उठकर चले गए तब मिक्की को शायद मेरी याद आई।

"जिज्जू ! थोड़ी देर बैठें ?"

"हाँ, यहीं दीवार के पास बैठ जाते हैं।"

हम दोनों पास पास बैठ गए। एक हलका सा हवा का झोंका आया तो मिक्की के बदन की कुंवारी खुश्बू मेरे तन मन को अन्दर तक सराबोर करती चली गई। मिक्की बंदरों को दाने डाल रही थी। कभी ऊपर उछालती कभी दूर फेंक देती बंदरों की इस उछल कूद से उसे बहुत मज़ा आ रहा था। मैंने उसे समझाया कि इनको ज्यादा मत सताओ नहीं तो ये काट खाएँगे पर मिक्की तो अपनी ही धुन में थी।

पेड़ की एक डाली पर एक बन्दर अपनी लुल्ली निकाले उसे छेड़ रहा था। मिक्की उसे बड़े ध्यान से देख रही थी। इतने में एक बंदरिया आई और बन्दर उसके ऊपर चढ़ कर आगे पीछे धक्का लगाने लगा। मिक्की ने बिना अपनी नज़रें हटाये मुझ से बोली "देखो जिज्जू ! ये बन्दर क्या कर रहे हैं।"

उसे क्या पता, वो बेख्याली में क्या बोल गई !

मेरे लिए भी ये अप्रत्याशित था। अब आप मेरी हालत का अंदाजा लगा सकते है मैंने अपने पप्पू को किस तरह से रोक रखा था। अगर ये घर या कोई सूनी जगह होती तो निश्चित ही मैं कुछ कर बैठता। पर मैंने उसे कहा, "ये आपस में प्यार कर रहे हैं, इनका भी शुक्र पर्वत तुम्हारी तरह बहुत ऊंचा है।"

अचानक वो बोली, "वो कैसे क्या आपको ....? क्या आपको हाथ देखना आता है ?"

आपको बता दूँ मैं थोड़ा बहुत हस्त रेखाएं देख लेता हूँ। पूरा तो नहीं जानता पर जीवन रेखा, हृदय रेखा आदि तो थोड़ा बहुत बता ही देता हूँ। बाकी तो गप्प लगाने वाली बात है। किसी को भी प्रभावित कर लेना मेरे बाएँ हाथ का खेल है। मैं जानता हूँ कि ये सब उसे उसकी मम्मी ने बताया होगा। क्यों कि मैं सुधा को भी एक दो बार पपलू बना चूका हूँ। उसे भविष्य और हाथ की रेखाओं को जानने की बड़ी इच्छा रहती है।

"हाँ ! हाँ !! आओ" मैंने उसे अपने पास खींचते हुए कहा।

मैंने उसका बायाँ हाथ अपने हाथ में ले लिया। हाथ के नाखून थोड़े बढ़े हुए थे। उन पर नेल-पेंट किया हुआ था। बाएँ हाथ का अंगूठा थोड़ा सा पतला लग रहा था और उस पर नेल-पेंट भी नहीं लगा था।

मैंने उससे पूछा,"मिक्की क्या तुम अभी भी अंगूठा चूसती हो ?"

"हाँ कभी कभी" उसने नज़रें झुकाते हुए कहा।

"तुम्हारी मम्मी तुम्हें मना नहीं करती क्या ?"

"वो तो बहुत गुस्सा होती हैं।"

"तो फिर तुम ऐसा क्यों करती हो ?"

"असल में मुझ से अनजाने में ऐसा हो जाता है।"

"अनजाने में हो जाता है या तुम्हे इसमें मज़ा भी आता है?"

"हाँ सच कहूँ तो जब मैं अकेली होती हूँ तो मुझे अंगूठा चूसने में बहुत मज़ा आता है" उसने मेरी आँखों में देखते हुए जवाब दिया।

"अब तुम्हारी अंगूठा चूसने की उम्र नहीं रही है कुछ और भी चूसना सीखो !"

"और क्या चूसने की चीज होती है जीजाजी ?" उसने आँखें मटकाते हुए कहा।

"जैसे कि....! जैसे कि ....!!" मैं गड़बड़ा गया लेकिन फिर संभालते हुए कहा "जैसे कि आइस कैंडी लोलीपोप और.... और....। कुल्फी.... बहुत सी चीजें हैं जिन्हें तुम प्यार से चूस सकती हो !"

एक बार तो मेरे जी में तो आया की कह दूँ अब तो तुम्हे लंड चूसना सीखना चाहिए पर मैं अभी कोई रिस्क नहीं लेना चाहता था। शुरू शुरू में थोड़ा संयम बरतना होगा नहीं तो ये चिड़िया मेरे हाथों से फुर्र हो जायेगी। वैसे तो मैं भी यही चाहता था कि वो अंगूठा चूसना जारी रखे। इसका एक कारण है ? हमारे गुरूजी कहते हैं जो लड़की बचपन में अंगूठा चूसती है वो अपने प्रेमी या पति की अच्छी प्रेमिका और पत्नी साबित होती है और

उनका दाम्पत्य जीवन बहुत ही अच्छा और सुखी बीतता है। मतलब आप बिलकुल अच्छी तरह समझ गए होंगे।

मैं बातों का सिलसिला रोमांटिक करना चाहता था, मैंने पूछा "अच्छा मिक्की एक बात बताओ !"

"क्या ?"

"तुम फिल्म देखती हो ?"

"उम्म्म.... हाँ"

"अच्छा बताओ तुम्हारा मनपसंद हीरो कौन है ?"

"मेरा उम्म्म....। हाँ।। मुझे तो अनिल कपूर अच्छा लगता है !"

मैं तो सोच रहा था कि वो शाहिद कपूर, रणबीर कपूर, ऋतिक रोशन जैसे किसी चिकने चॉकलेटी हीरो का नाम लेगी। मैंने उस से कहा "अनिल कपूर ! ? अरे वो मुच्छड़?"

"पता है उसने मिस्टर इंडिया में कितना अच्छा काम किया है। उसके पास एक जादू का रिस्ट बैंड होता है जिसको कलाई में पहन कर वो गायब हो जाता है।" मिक्की ने ऑंखें नचाते हुए कहा फिर ठंडी सांस लेते हुए बोली "काश ऐसा ही बैंड मेरे पास भी होता !!"

"अच्छा आप बताओ आप को कौन पसंद है ?" मिक्की बोली।

"आ....न !! मुझे ? मुझे तो अजय देवगन अच्छा लगता है"

"अरे ! वो अकड़ू.... ओह नो ! आप झूठ बोल रहे हैं !"

"इसमें झूठ बोलने वाली क्या बात है ?" मैंने कहा।

"पर लड़कों और आदमियों को तो फ़िल्मी हिरोइन पसंद होती है ना ? और अजय देवगन कोई लड़की थोड़े ही है ?" मिक्की मेरा मखौल उड़ाते हुए हंसने लगी।

"ओह....!!" मेरी भी हंसी निकल गई। मैंने बात संवारते हुए कहा "भई मुझे तो सबसे ज्यादा मिक्की ही अच्छी लगती है और कोई नहीं !" मैंने उसकी नाक पकड़ते हुए कहा। मुझे तो बस उसके गाल, होंठ, नाक या नितम्ब कुछ भी छूने का बस बहाना ही चाहिए होता था। इस मौके पर मैं चाहता तो मिक्की को जोर से अपनी बाहों में भर कर चुम्बन भी ले सकता था पर थोड़ी दूर पर २-३ लौंडे लपाड़े खड़े हमारी ओर ही देख रहे थे, मैंने अपने आप को बड़ी मुश्किल से रोका।

"हूँ.... ह...." मिक्की ने मुंह सा बनाया।

"अरे भई सच ....! बाय गोड मैं तुमसे बहुत प्यार.... अररर मेरा मतलब है प्रेम.... वो ! वो ! बहुत चाहता हूँ मैं तुम्हें....!" मेरी जबान साथ नहीं दे रही थी।

मिक्की खिलखिला कर हंस रही थी "वो तो मुझे पता है कि आप मेरे पीछे पागल हैं और मेरे ऊपर लट्टू हैं पर मैं तो फ़िल्मी हिरोइन की बात कर रही थी।" मिक्की ने अपने हाथों से अपनी हंसी रोकने की कोशिश करते हुए कहा।

मैं इस फिकरे का मतलब अगले दो दिनों तक सोचता ही रहा था। मैंने फिर बात संवारते हुए कहा "उम्म्म....। हाँ.... चलो मुझे जिया खान

सबसे सुन्दर लगती है"

"जिऽऽइऽऽअआ.... जिया खान अरे वो !! एक नंबर की चीट .... धोखेबाज !"

"क्यों उस बेचारी ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?"

"अरे आप उसे बेचारी कहते हैं आप नहीं जानते उसने निःशब्द में अमित अन्कल से पहले तो प्यार का नाटक किया और बाद में छोड़ कर चली गई ! च !!! च.... बेचारे अमित अंकल उसकी याद में कितना रोये थे! मैं होती तो कभी छोड़ कर न जाती !" मिक्की ने जिस अंदाज में कहा था मैं तो उसकी इस अदा पर दिलो-जान से कुर्बान ही हो गया। साला रामगोपाल वर्मा भी एक नंबर का गधा है अगर निःशब्द बनानी ही थी तो मिक्की और मुझे लेकर बनाता तो बात ही कुछ और होती। मेरा दावा है गोल्डन जुबली तो जरूर हो जाती।

खैर मैंने बातों का रुख बदलते हुए पूछा "अच्छा बताओ तुम्हारी उम्र क्या हुई है?"

"तीस अप्रैल को में मैं पूरी अट्ठारह साल की हो गई हूँ, क्यों ?"

"लेकिन.... जिज्जू आप क्यों पूछ रहे हैं?... छोड़ो इन बातों को ! मेरा हाथ देखो ना !" मिक्की थोड़ा सा झुंझलाते हुए बोली।

मैंने उसका हाथ अपने हाथों में ले लिया। नाज़ुक मुलायम चिकनी हथेली और पतली पतली अंगुलियाँ। इन नाजुक हाथों से अगर ये मेरा पप्पू पकड़ ले तो मैं सारी कायनात न्योछावर कर दूँ।

उसके हाथ को थोड़ा सीधा करते हुए और धीरे धीरे मसलते हुए मैंने

कहा,"देखो यह तुम्हारी जीवन-रेखा है !"

मैंने ध्यान से देखा उन्नीसवें साल में उसे बहुत बड़ा शारीरिक कष्ट आने वाला है। मैं इस कष्ट को अच्छी तरह जानता था पर मैंने उसे नहीं बताया।

"हाँ आगे बताइये !"

"अच्छा ये तुम्हारी विद्या-रेखा है" मैंने अपने अंगुली को विद्या रेखा वाली जगह रखा तो मेरी ओर देखने लगी। मैंने पूछा "तुम जीवन में आगे क्या बनाना चाहती हो?"

"पापा तो कहते है तुम एम.बी.ए. या सी.ए. कर लो। आप क्या कहते हो ?"

"मैं तो एम.बी.बी.एस. करके डॉक्टर बनना चाहता था पर नहीं बन पाया क्या तुमने कभी डॉक्टर बनाने के बारे में नहीं सोचा ?"

"अरे बाप रे ! उसमें तो बहुत पढ़ाई करनी पड़ती है ? आँखों पर मोटा सा चश्मा लग जाता है !"

"तो क्या हुआ ! कुछ बनाने के लिए कुछ मेहनत तो करनी ही पड़ती है, और फिर दूसरो को इंजेक्शन लगाने में तुम्हे मजा भी तो आएगा !" वो हैरानी से मुझे देखने लगी और मैं हंसने लगा।

मिक्की ने कहा "चलो वो बाद में सोचेंगे, हाँ ! आगे बताइये !"

"और ये तुम्हारी हार्ट-लाइन है !"

"हुम्म्म्म्म"

"और ये शुक्र पर्वत है।" मैंने उसकी हथेली के एक ओर इशारा करते हुए

कहा।

"हाँ हाँ ! शुक्र पर्वत के बारे में बताइये !"

"क्यों तुम शुक्र पर्वत के बारे में ही क्यों जानना चाहती हो? तुम्हें जीवन रेखा या हृदय रेखा के बारे में नहीं जानना ?" मैंने पूछा।

"नहीं पहले शुक्र रेखा, आई मीन, पर्वत के बारे में बताइये !" वो फिर जिद्द करने लगी। उसने बाद में बताया था कि एक दिन कोई पंडितजी उनके घर आये थे और वो मम्मी का हाथ देख रहे थे। पर जब शुक्र पर्वत की बात आई तो पंडितजी और मम्मी ने उसे बाहर भेज दिया था। पता नहीं ऐसी क्या बात थी जो उसके सामने नहीं बताना चाहते थे।

अगर आपको थोड़ा बहुत हस्त रेखाओं का ज्ञान हो तो आप जानते होंगे कि शुक्र ग्रह को सेक्स का ग्रह माना जाता है। जिसका शुक्र पर्वत जितना ऊँचा उठा होता है सेक्स के मामले में वो उतना ही ज्यादा कामासक्त और सक्रिय होता है। मैं जानता हूँ सुधा एक नंबर की चुद्दकड़ है। जब से रमेश एक एक्सीडेंट के बाद सेक्स के मामले में कुछ ढीला हुआ है सुधा के सेक्स कि भूख और ज्यादा बढ़ गई है। मैं भी उसे चोद चुका हूँ उसकी गांड भी मार चुका हूँ। ऐसी ठरकी औरतें एक मर्द से कभी संतुष्ट नहीं होती। (खैर मेरा ये अनुभव 'नन्दोइजी नहीं लंन्दोइजी' नाम से बाद में पढ़ लेना)

हे भगवान् ! तू कितना दयालु है। मेरे जैसे भक्त के ऊपर कितना मेहरबान है। मिक्की का शुक्र पर्वत उसकी मम्मी से भी ज्यादा उंचा है। आप समझ गए होंगे मेरी तो लाटरी ही लग जायेगी। इतनी हसीन नाज़ुक कमसिन कच्ची कली मेरे सामने अपना हुस्न लुटाने बेताब बैठी है। या अल्लाह....। सॉरी !!! लिंग महादेव....!

"ओफ्फो.... जीजू बताइये न ?"

"हाँ हाँ.... देखो ये जो शुक्र पर्वत होता है ये कामगुरु होता है और उसे नियन्त्रित करता है।" मैंने उसे समझाते हुए कहा।

"ये काम-गुरु क्या होता है ?" मिक्की ने पूछा।

अब मेरे लिए उलझन का वक़्त था। क्या सब कुछ स्पष्ट शब्दों में बोल दूँ या फिर थोड़ा घुमा फिरा कर उसे समझाऊं। मेरा पप्पू और दिल तो कह रहे थे- गुरु ! लोहा गरम है और खुदा मेहरबान है (क्या पता इतनी जल्दी लिंग महादेव प्रसन्न हो गए हों) मार दो हथोड़ा ! क्यों इधर उधर भटक रहे हो, इस कच्ची कली को प्यार से लंड और चूत की परिभाषा साफ़ साफ़ बता दो।

लेकिन फिर मस्तिष्क ने कहा- कुछ पर्दा तो रखो ! अगर उसने अपनी मम्मी या बुआजी से कुछ उलटा सीधा कह दिया तो हाथ में आई मछली फिसल जायेगी और तुम जिंदगी भर इस कमसिन कली की याद में अपना लंड हाथ में लिए मुठ मारते रह जाओगे। इस अनछुई नाज़ुक चूत (सॉरी बुर) को चोदने के सारे सपने एक मिनट में स्वाहा हो जायेंगे।

मैंने एक जोर का सांस लिया और एक मिनट में सब कुछ सोच लिया। मैं इतना पागल नहीं था कि ऐसा सुन्दर मौका हाथ से निकल जाने देता।

"देखो, मैं तुम्हे साफ़ साफ़ समझा तो दूंगा, पर मेरी एक शर्त है ?" मैंने कहा।

"वो क्या ?" मिक्की ने हैरत भरी नज़रों से मुझे देखा।

"देखो तुम्हारी मम्मी भी कुछ बातें तुमसे छुपाती हैं ? है ना ?"

"हांssन ?"

"तो तुम भी वादा करो कि हमारे बीच जो बाते हो रही हैं या भविष्य में होंगी उनके बारे में अपनी मम्मी या बुआजी किसी को कभी नहीं बताओगी !"

"ठीक है"

"प्रोमिस?"

"हाँ प्रोमिस ! पक्का !!" मिक्की ने हामी भरी।

दोस्तों ! अब तो बस मेरी मंजिल का फासला कोई दो कदम का ही रह गया था।

लेकिन दिल्ली अभी दूर थी। अचानक एक बन्दर उछलता हुआ पता नहीं कब हमारे बीच आया और मिक्की के हाथों से मिठाई और चने का पैकेट छीन कर भाग गया। मिक्की की घिग्घी बंध गई और डर के मारे मुझ से लिपट गई। उफ़्फ़....! उसके नाजुक कबूतर (उरोज) मेरे दोनों हाथों में आ गए मैंने उसे अपनी बाहों में समेट लिया, वो मम्मी ! मम्मी ! चिल्ला रही थी।

मैं उसको चुप कराने की कोशिश कर रहा था और कोशिश क्या मैं तो इस सुखद घटना का पूरा फायदा उठा रहा था। कभी उसके नरम गालों पर हाथ फेरता कभी उसके नितम्बों पर कभी उसके उरोजों पर। मिक्की किसी अबोध डरे हुए बच्चे की तरह मुझसे लिपटी थी जैसे कोई लता

किसी पेड़ से। उसका दिल बहुत जोर से धड़क रहा था। वो मेरे सीने से चिपटी रोए जा रही थी।

इतने में दो तीन आदमी और औरतें भागते हुए आये और पूछने लगे क्या हुआ। मैंने उन्हें कहा कुछ नहीं थोड़ा सा डर गई है एक बन्दर मिठाई का लिफाफा छीन कर भाग गया और ये डर गई।

अब वहाँ रुकने का कोई मतलब नहीं रह गया था। हमने जल्दी जल्दी वहाँ से उतरना चालू कर दिया। शाम होने वाली थी। मिक्की डर के मारे एक बच्चे कि तरह मेरा बाजू पकड़े मुझसे चिपकी हुई थी। मेरे लिए तो ये स्वर्णिम अवसर था। मैं भला ऐसा सुन्दर मौका कैसे छोड़ सकता था मैंने भी उसे अपने से चिपटा लिया। हे महादेव ! तुमने तो मेरी एक ही सोमवार में सुन ली।

कोई सात बजे का समय रहा होगा। अब एक और खूबसूरत हादसा होने वाला था। मिक्की ने चढ़ाई शुरू करने से पहले पूरी एक बोतल पानी और दो-तीन फ्रूटी भी पी थी। अब भला पेट का क्या कसूर ! सू सू तो आना ही था ?

"फूफाजी ! मुझेऽऽ सूऽऽ-सूऽऽ आऽ रहाऽ हैऽ !" वो संकुचाते हुए बोली। अब वहाँ बाथरूम तो था नहीं, मैंने कहा "जाओ उस बड़े पत्थर के पीछे कर आओ।"

वो डर के मारे अकेली नहीं जाना चाहती थी,"नहीं आप मेरे साथ चलो आप मुंह दूसरी तरफ कर लेना !"

आप सोच सकते हैं मेरी जिन्दगी का सबसे खूबसूरत पल आने वाला था।

मेरी तो मनमांगी मुराद ही पूरी होने वाली थी।

हम पत्थर के पीछे चले गए। मैंने थोड़ा सा मुंह घुमा लिया।

उसने अपनी सफ़ेद पेंट नीचे सरकाई- काली पेंटी में फंसी उसकी खूबसूरत हलके हलके सुनहरी रोएँ से सजी नाज़ुक सी बुर अब केवल दो तीन फीट की दूरी पर ही तो थी। जिसके लिए आदमी तो क्या देवदूत भी स्वर्ग जाने से मना कर दें। मैंने अपने आप को बहुत रोका पर उसकी बुर को देख लेने का लोभ संवरण नहीं कर पाया।

मेरे जीवन का ये सबसे खूबसूरत नजारा था। उसकी नाभि के नीचे का भाग (पेडू) थोड़ा सा उभरा हुआ। उफ़ ।। भूरे भूरे छोटे छोटे सुनहरे बालो (रोएँ) से लकदक उसकी बुर का चीरा कोई 3 इंच का तो जरूर होगा। गुलाबी पंखुड़ियां। ऊपर चने के दाने जीतनी रक्तिम मदन मणि गुलाबी रंगत लिए भूमिका चावला और करीना कपूर के होंठों जैसी लाल सुर्ख फांके। फूली हुई तिकोने आकार की उसकी छोटी सी बुर जैसे गुलाब की कोई कली अभी अभी खिल कर फूल बनी है।

मैं उसे छू तो नहीं सकता था पर उसकी कोमलता का अंदाजा तो लगा ही सकता था। अगर चीकू को बीच में से काट कर उसके बीज निकाल दिए जाएँ और उसे थोड़ा सा दबाया जाए तो पुट की आवाज के साथ उसका छेद थोड़ा सा खुल जायेगा अब आप आँखें बंद करके उसे प्यार से स्पर्श कर के देखिये उस लज्जत और नज़ाकत को आप महसूस कर लेंगे। बुर के चीरे से कोई एक इंच नीचे गांड का गुलाबी भूरा छेद खुल और बंद होता ऐसे लग रहा था जैसे मर्लिन मुनरो अपने होंठों को सीटी बजाने के अंदाज में सिकोड़ रही हो। उसके गोल गोल भरे नितम्ब जैसे कोई खरबूजे

गुलाबी रंगत लिए हुए किसी को भी अपना ईमान तोड़ने पर मजबूर कर दे। केले के पेड़ जैसी पुष्ट चिकनी जंघाएँ और दाहिनी जांघ पर एक काला तिल। हे भगवान् मैं तो बस मंत्रमुग्ध सा देखता ही रह गया। ये हसीं नजारा तो मेरे जीवन का सबसे कीमती और अनमोल नजारा था।

मिक्की एक झटके के साथ नीचे बैठ गई। उसकी नाजुक गुलाबी फांके थोड़ी सी चौड़ी हुई और उसमें से कल-कल करती हुई सू-सू की एक पतली सी धार....शुर्ररsss... शिच्च्च्च....!! सीईई.... पिस्स्स्स ! करती लगभग डेढ़ या दो फ़ुट तो जरूर लम्बी होगी।

कम से कम दो मिनट तक वो बैठी सू-सू करती रही। पिस्स्स्स....! का मधुर संगीत मेरे कानो में गूंजता रहा। शायद पिक्की या बुर को पुस्सी इसी लिए कहा जाता है कि उसमे से पिस्स्स्स.... का मधुर संगीत बजता है। छुर्रर....। या फल्ल्ल्ल्ल....। की आवाज तो चूत या फिर फुद्दी से ही निकलती है। अब तक मिक्की ने कम से कम एक लीटर सू-सू तो जरूर कर लिया होगा। पता नहीं कितनी देर से वो उसे रोके हुए थी। धीरे धीरे उसके धार पतली होती गई और अंत में उसने एक जोर की धार मारी जो थोड़ी सी ऊपर उठी और फिर नीचे होती हुई बंद हो गई। ऐसे लगा जैसे उसने मुझे सलामी दी हो। दो चार बूंदें तो अभी भी उसकी बुर के गुलाबी होंठों पर लगी रह गई थी।

इस जन्नत भरे नजारे को देखने के बाद अब अगर क़यामत भी आ जाए तो कोई डर नहीं। बरसों के सूखे के बाद सावन जैसी पहली बारिश की फुहार से ओतप्रोत मेरा तन मन सब शीतल होता चला गया। उस स्वर्ग के द्वार को देख लेने के बाद अब और क्या बचा था। मुझे लगा कि मैं तो

बेहोश ही हो जाऊँगा। मेरे शेर ने तो पैन्ट में ही अपना दम तोड़ दिया। पर इस दृश्य के बाद मेरे शेर के शहीद होने का मुझे कोई गम नहीं था।

मैं यही सोच रहा था कि स्वर्ग के द्वार से अभी तक मिक्की ने केवल मूतने का ही काम क्यों लिया है। जब वो उठी तो किसी पेड़ से एक पक्षी पंख फड़फड़ाता कर्कश आवाज करता हुआ उड़ा तो मिक्की फिर डर गई और इस बार फिर मेरी और दौड़ने के चक्कर में उसका पैर फिसला और पैर में थोड़ी सी मोच आ गई। इतने खूबसूरत हादसे के बाद फिर ये तकलीफदेह दुर्घटना हे भगवान् क्या सब कुछ आज ही होने वाला है ??

जब हम घर पहुंचे तो मिक्की को लंगड़ाते हुए देख कर मधु ने घबरा कर पूछा "अरे कहीं एक्सीडेंट तो नहीं हो गया ? क्या हुआ मोना को ?"

"अरे कुछ ख़ास नहीं, थोड़ा सा फिसल गई थी, लगता है मोच आ गई है !"

"हे भगवान् ध्यान से नहीं चल सकते थे क्या ? ऑफ.... इधर आओ जल्दी करो लाओ आयोडेक्स मल देती हूँ" मधु घबरा सी गई।

"नहीं बुआजी कोई ज्यादा चोट नहीं लगी है " मिक्की ने बताया।

"चुप ! तुझे क्या पता कहीं फ्रेक्चर तो नहीं हो गया ? किसी डॉक्टर को क्यों नहीं दिखाया उसी समय ?" मधु बिना किसी की बात सुने बोलती जा रही थी।

आयोडेक्स लगाने, नमक वाले पानी से सिकाई करने, हल्दी वाला दूध पिलाने और इतनी गर्मी में भी चद्दर उढ़ा कर सुलाने के बाद ही मधु ने उसका पीछा छोड़ा।

मैं बाथरूम में जाकर अपना अंडरवियर चेंज करके जब ड्राइंग रूम में

आया तो वहाँ पर मिठाई का एक डिब्बा पड़ा हुआ नज़र आया। मैंने मधु से जब इसके बारे में पुछा तो उसने बताया "अरे वो निशा है ना !"

"कौन निशा ?"

"तुम्हें तो कुछ याद ही नहीं रहता ! अरे वो मेरी झाँसी वाली कजिन की रिश्तेदार है न स्कूल में ?"

ये औरतें भी अजीब होती है कोई भी बात सीधे नहीं करेगी घुमा फिर कर बताने और बात को लम्बा खीचने में पता नहीं इनको क्या मज़ा आता है।

"हाँ हाँ तो ?"

"अरे भई उसके देवर की शादी है। वो तो मुझे कल रात को उनके यहाँ होने वाले फंक्शन में बुलाने का कह कर गई है। रिसेप्सन में तो जाना पड़ेगा ही सोच रही हूँ रात वाले फंक्शन में जाऊं या नहीं ?"

मैं जानता था मैं मना करू या हाँ भरूं, मधु नाचने गाने का ये चांस बिलकुल नहीं छोड़ने वाली। मधु बहुत अच्छी डांसर है। शादी के बाद तो उसे किसी कॉम्पिटिशन में नाचने का अवसर तो नहीं मिला पर शादी विवाह या पार्टीज में तो मधु का डांस देख कर लोग तौबा ही कर उठते हैं। इस होली पर भांग पीकर उसने जो ठुमके लगाए थे और कूल्हे मटकाए थे, कालोनी के बड़े बुजुर्गों का भी 'ढीलू प्रसाद' धोती में उछलने लगा था। क्या कमाल का नाचती है।

आप की जानकारी के लिए बता दूँ राजस्थान में शादी वाली रात जब लड़की के घर फेरे होतें है तो लड़के वालों के घर पर रात को नाच गाना होता है। उसमे सिर्फ मोहल्ले वाली और नजदीकी रिश्तेदार औरतें ही

शामिल होती है। मैं तो सपने में भी नहीं सोच सकता था इतना सुनहरा मौका इतनी जल्दी मुझे मिल जायेगा। सच कहते है सचे मन से भगवान् को याद किया जाए तो वो जरूर सुनाता है। अब तक आपने अंदाजा लग ही लिया होगा कि मेरे जैसे चुद्दकड़ आदमी की भगवान् में कितनी आस्था होगी ? वैसे देखा जाये तो मैं भगवान्, स्वर्ग-नर्क, पाप-पुण्य, पूजा-पाठ आदि में ज्यादा विश्वास नहीं रखता पर इन खूबसूरत हादसों के बाद तो उसे मान लेने को जी चाहता है।

मैंने आज पहली बार पूजा घर में जाकर भगवान का धन्यवाद किया।

तीन चुम्बन-४

लेखक : प्रेम गुरू

दोस्तों, आज दिन भर मैं ऑफिस में सिर्फ मिक्की के बारे में ही सोचता रहा। कल जिस तरह से खूबसूरत घटनाएँ हुई थी, मेरे रोमांच का पारावार ही नहीं था। इतना खुश तो मैं सुहागरात मना कर भी नहीं हुआ था। मैं दिन भर इसी उधेड़बुन में लगा रहा कि कैसे मिक्की और मैं एक साथ अकेले सारी रात भर मस्ती करेंगे। न कोई डर न कोई डिस्टर्ब करनेवाला। सिर्फ मैं और मिक्की बस।

मैं सोच रहा था मिक्की को कैसे तैयार करूँ। कभी तो लगता कि मिक्की सब कुछ जानती है पर दूसरे ही पल ऐसा लगता कि अरे यार मिक्की तो अभी अट्ठारह साल की ही तो है उसे भला मेरी भावनाओं का क्या पता होगा। अगर जल्दबाजी में कुछ गड़बड़ हो गई और मिक्की ने शोर मचा दिया तो ???

मैं ये सब सोच सोच कर ही परेशान हो गया। क्या करूँ कुछ समझ नहीं आ रहा। गुरूजी सच कहते है चुदी चुदाई औरतों को चोदना बहुत आसान होता है पर इन कमसिन बे-तजुर्बेकार लड़कियों को चोदना वाकई दुष्कर काम है। मैंने अपनी योजना पर एक बार फिर गौर किया। हल्दी मिले दूध में अगर नींद की दो तीन गोलियाँ मिला दी जाएँ तो पता ही नहीं चलेगा। गहरी नींद में मैं उसके कोरे बदन की खुशबू लूट लूँगा।

मैंने एक दो दिन पहले ही नींद की गोलियों का इंतजाम भी कर लिया था। लेकिन फिर ख़याल आया मिक्की की बुर अगर मेरा इतना मोटा और लम्बा लंड सहन नहीं कर पाई और कुछ खून खराबा ज्यादा हो गया और कहीं डॉक्टर की नौबत आ पड़ी तो तो ? मैं तो सोच कर ही काँप उठा ?

आपको बता दूं कि मैं किसी भी तरह की जोर जबरदस्ती या बलात्कार पर आमादा नहीं था। मैं तो मिक्की से प्यार करता था मैं उसे कोई नुक्सान या कष्ट कैसे पहुंचा सकता था। काश मिक्की अपनी बाँहें फैलाए मेरे आगोश में आ जाए और अपना सब कुछ मेरे हवाले कर दे जैसे एक दुल्हन सुहागरात में अपने दुल्हे को समर्पित कर देती है। इस समय मुझे रियाज़ खैराबादी का एक शेर याद आ गया :

हम आँखें बंद किये तस्सवुर में बैठे हैं !

ऐसे में कहीं छम्म से वो आ जाए तो क्या हो !!

जब कुछ समझ नहीं आया तो मैंने सब कुछ भगवान् के भरोसे छोड़ दिया। हालात के हिसाब से जो होगा देखा जायेगा।

शाम को मैं जानबूझकर देरी से घर पहुंचा। कोई आठ साढ़े-आठ का समय

रहा होगा। खाना तैयार था। मधु पार्टी में जाने की तैयारी कर रही थी। इन औरतों को भी तैयार होने में कितना वक़्त लगता है। उसने शिफ़ॉन की काली साड़ी पहनी थी और लो कट ब्लाउज। मधु साड़ी इस तरह से बांधती है कि उसके नितम्ब भरे-पूरे नज़र आते हैं। सच पूछो तो उसकी सबसे बड़ी दौलत ही उसके नितम्ब है। और मैं तो ऐसे नितम्बों का मुरीद हूँ। जब वो कोई साढ़े नौ बजे तक मुश्किल से तैयार हुई तो मैंने मज़ाक में उससे कहा "आज किस किस पर बिजलियाँ गिराओगी !!"

वो अदा से आईने में अपने नितम्बों को देखते हुए बोली "अरे वहाँ तो आज सिर्फ औरतें ही होंगी, मनचले भंवरे और परवाने नहीं !"

"कहो तो मैं साथ चलूँ?" मैंने उसे बांहों में लेना चाहा।

"ओफ़्फ़ ! छोड़ो न तुम्हें तो बस इस एक चीज के अलावा कुछ सूझता ही नहीं ! पता है मैं दो दिनों से ठीक से चल ही नहीं पा रही हूँ।" उसने मुझे परे धकेलते हुए कहा।

"अच्छा, यह बताओ, मैं कैसी लग रही हूँ?" औरतों को अपनी तारीफ़ सुनाने का बड़ा शौक होता है। सच पूछो तो उसके कसे हुए नितम्बों को देख कर एक बार तो मेरा मन किया कि उसे अभी उलटा पटक कर उसकी गांड मार लूँ पर अभी उसका वक़्त नहीं था।

मैंने कहा "एक काजल का टीका गालों पर लगा लो कहीं नज़र न लग जाए !"

मधु किसी नव विवाहिता की तरह शरमा गई ! ईईईस्स्स्स्श...।।

कोई दस बजे वो कार से अपनी सहेली के घर चली गई। (मधु कार चला

लेती है) जब मैं गेट बंद करके मैं ड्राइंग रूम में वापस आया तो मिक्की बाथरूम में थी शायद नहा रही थी।

मैं स्टडी रूम में चला गया। मैंने दो दिनों से अपने मेल चेक नहीं किये थे। मैंने जब कम्प्यूटर ओन किया तो सबसे पहले स्टार्ट मेन्यू में जाकर रिसेंट डॉक्यूमेंट्स देखे तो मेरी बांछे ही खिल गई। जैसा मैंने सोचा था वो ही हुआ। वीडियो पिक्चर की फाइल्स खोली गई थी और ये फाइलें तो मेरी चुनिन्दा ब्ल्यू-फिल्मों की फाइलें थी। आईला...!! मेरा दिल बेतहाशा धड़कने लगा। अब मेरे समझ में आया कि कल दोपहर में मिक्की स्टडी रूम से घबराई सी सीधे रसोई में क्यों चली गई थी।

मोनिका डार्लिंग तूने तो कमाल ही कर दिया। मेरे रास्ते की सारी बाधाएं कितनी आसानी से एक ही झटके में इस कदर साफ़ कर दी जैसे किसी ने कांटेदार झाड़ियाँ जड़ समेत काट दी हो और कालीन बिछा कर ऊपर फूल सजा दिए हो। अब मैं किसे धन्यवाद दूँ, अपने आपको, कंप्यूटर को, मिक्की को या फिर लिंग महादेव को ?

मैंने इन फाइल्स को फिर से पासवर्ड लगा कर लॉक कर दिया और अपनी आँखें बंद कर के सोचने लगा। मिक्की ने इन फाइल्स और पिक्चर्स को देख कर कैसा अनुभव किया होगा ? कल पूरे दिन में उसने कम्प्यूटर की कोई बात नहीं की वरना वो तो मेरा सिर ही खा जाती है। मैं भी कतई उल्लू हूँ मिक्की की आँखों की चमक, उसका सजाना संवारना, मेरे से चिपक कर बाइक पर बैठना, शुक्र पर्वत की बात करना, बंदरों की ठोका-ठुकाई की बात इससे ज्यादा बेचारी और क्या इशारा कर सकती थी। क्या वो नंगी होकर अपनी बुर हाथों में लिए आती और कहती लो आओ चोदो

मुझे ? मुझे आज महसूस हुआ कि आदमी अपने आप को कितना भी चालाक, समझदार और प्रेम गुरु माने नारी जाति को कहाँ पूरी तरह समझ पाता है फिर मेरी क्या बिसात थी।

कम्प्यूटर बंद करके मैं आँखें बंद किये अभी अपने ख्यालों में खोया था कि अचानक मेरी आँखों पर दो नरम मुलायम हाथ और कानों के पास रेंगते हुए साँसों की मादक महक मेरे तन मन को सराबोर कर गई। इस जानी पहचानी खुशबू को तो मैं मरने के बाद भी नहीं भूल सकता, कैसे नहीं पहचानता। मेरे जीवन का यह बेशकीमती लम्हा काश कभी ख़त्म ही न हो और मैं क़यामत तक इसी तरह मेरी मिक्की मेरी मोना मेरी मोनिका के कोमल हाथों का मखमली स्पर्श महसूस करता रहूँ। मैंने धीरे से अपने हाथ कुर्सी के पीछे किए। उसके गोल चिकने नितम्ब मेरी बाहों के घेरे में आ गए, बीच में सिर्फ़ नाईटी और पैन्टी की रुकावट थी।

उफ्फ्फ... मिक्की की संगमरमरी जांघे उस पतली सी नाइटी के अन्दर बिलकुल नंगी थी। मैं इस लम्हे को इतना जल्दी ख़त्म नहीं होने देना चाहता था। पता नहीं कितनी देर मैं और मिक्की इसी अवस्था में रहे। फिर मैंने हौले से उसकी नरम नाज़ुक हथेलियों को अपने हाथों में ले लिया और प्यार से उन्हें चूमने लगा। मिक्की ने अपना हाथ छुड़ा लिया और मेरे सामने आ कर खड़ी होकर पूछने लगी- कैसी लग रही हूँ?

मैंने उसके हाथ पकड़ कर उसे अपनी ओर खींच लिया और अपनी गोद में बैठा कर अपने जलते होंठ उसके होंठों पर चूमते हुए कहा- सुन्दर, सेक्सी ! बहुत प्यारी लग रही है मेरी, सिर्फ़ मेरी मिक्की !

मिक्की ने शरमाते हुए गर्दन झुका ली !

मैंने उसकी ठुड्डी पकड़ कर उसके चेहरे को ऊपर उठाया और फ़िर से उसके गुलाबी लब मेरे प्यासे होंठों की गिरफ़्त में आ गए। बरसों से तड़फती मेरी आत्मा उस रसीले अहसास से सराबोर हो गई। जैसे अंधे को आँखें मिल गई हो, भूले को रास्ता और बरसों से प्यासी धरती को सावन की पहली फुहार। जैसे किसी ने मेरे जलते होंटों पर होले से बर्फ की नाज़ुक सी फुहार छोड़ दी हो।

अब तो मिक्की भी सारी लाज़ त्याग कर मुझे इस तरह चूम रही थी कि जैसे वो सदियों से कैद एक 'अभिशप्त राजकुमारी' है, जैसे उसे केवल यही एक पल मिला है जीने के लिए और अपने बिछुड़े प्रेमी से मिलने का। मैं अपनी सुधबुध खोये कभी मिक्की की पीठ सहलाता कभी उसके नितम्बों को और कभी होले से उसकी नरम नाज़ुक गुलाब की पंखुड़ियों जैसे होंठो को डरते डरते इस कदर चूम रहा था कि कहीं भूल से भी मेरे होंठो और अंगुलियों के खुरदरे अहसास से उसे थोड़ा सा भी कष्ट न हो। मेरे लिए ये चुम्बन उस 'अनमोल रत्न' की तरह था जिसके बदले में अगर पूरे जहां की खुदाई भी मिले तो कम है।

आप जानते होंगे मैं स्वर्ग-नर्क जैसी बातों में विश्वास नहीं रखता पर मुझे आज लग रहा था कि अगर कहीं स्वर्ग या जन्नत है तो बस यही है यही है यही है...!

अचानक ड्राइंग रूम में रखे फ़ोन की कर्कश घंटी की आवाज से हम दोनों चौंक गए। हे भगवान् इस समय कौन हो सकता है ? किसी अनहोनी और नई आफत की आशंका से मैं काँप उठा। मैंने डरते डरते फ़ोन का रिसीवर इस तरह उठाया जैसे कि ये कोई जहरीला बिच्छू हो। मेरा चेहरा ऐसे लग

रहा था जैसे किसी ने मेरा सारा खून ही निचोड़ लिया हो।

मैं धीमी आवाज में हेल्लो बोला तो उधर से मधु की आवाज आई, "आपका मोबाइल स्विच ऑफ आ रहा है !"

"ओह ! क्या बात है?" मैंने एक जोर की सांस ली।

"वो वो मैं कह रही थी किss किss हाँ ss मैं ठीक ठाक पहुँच गई हूँ और हाँ !"

पता नहीं ये औरतें मतलब की बात करना कब सीखेंगी "हाँ मैं सुन रहा हूँ"

"आर।। हाँ वो मिक्की को दवाई दे दी क्या ? उसे हल्दी वाला दूध पिलाया या नहीं ?"

"हाँ भई हाँ दूध और दवाई दोनों ही पिलाने कि कोशिश ही कर रहा था !" मैंने मिक्की की ओर देखते हुए कहा "हाँ एक बात और थी कल सुबह भैया और भाभी दोनों वापस आ रहे हैं उन्होंने मोबाइल पर बताया है कि अंकल अब ठीक हैं।" मधु बस बोले जा रही थी "सुबह मैं आते समय उन्हें स्टेशन से लेती आउंगी तुम परेशान मत होना। ओ के ! लव ! गुड नाईट एंड स्वीट ड्रीम्स !"

मधु जब बहुत खुश होती है तो मुझे लव कहकर बुलाती है (मेरा नाम प्रेम है ना)। लेकिन आज जिस अंदाज़ में मुझे उसने लव के साथ गुड नाईट और स्वीट ड्रीम्स कहा था मैं उसके इस चिढ़ाने वाले अंदाज़ को अच्छी तरह समझ रहा था। सारी रात उससे दूर ? पर उसे क्या पता था कि आज तो सारी रात ही मेरे स्वीट ड्रीम्स सच होने वाले हैं ?

मिक्की मेरे चेहरे की ओर देख रही थी। मैंने उसे जल्दी से सारी बात बता

दी। वो पहले तो थोड़ा हंसी और फिर दौड़ कर मेरी बाहों में समा गई। मैंने उसे अपनी गोद में उठा कर उसके गालों पर एक करारा सा चुम्बन ले लिया। जवाब में उसने मेरे होंठ काट खाए जिससे उन पर थोड़ा सा खून भी निकल आया। इस छोटे से दर्द का मीठा अहसास मेरे से ज्यादा भला और कौन जान सकता है। मैं उसे गोद में उठाये अपने बेडरूम में आ गया। मिक्की की आँखें बंद थी। वो तो बस हसीं ख़्वाबों की दुनिया में इस कदर खोई थी कि कब मैंने उसकी नाइटी उतार दी उसे कोई भान ही नहीं रहा।

और अब बेजोड़ हुस्न की मल्लिका मेरे आगोश में आँखें बंद किये बैठी थी। अगर ठेठ उज्जड भाषा में कहा जाए तो मेरी हालत उस भूखे शेर की तरह थी जिसके सामने बेबस शिकार पड़ा हो और वो ये सोच रहा हो कि कहाँ से शुरू करे। लेकिन मैं कोई शिकारी या जंगली हिंसक पशु नहीं था। मैं तो प्रेम का पुजारी था। अगर रोमांटिक भाषा में कहा जाए तो मेरे सामने छत्तीस प्रकार के व्यंजन पड़े थे और मैं फैसला नहीं कर पा रहा था कि कौन सा पकवान पहले खाऊं ।

मैंने अभी कपड़े नहीं उतारे थे। मैंने कुर्ता-पायजामा पहने हुआ था। मेरा लंड मेरे काबू में नहीं था वो किसी नाग की तरह फुफकार मार रहा था। १२० डिग्री के कोण में पायजामे को फाड़ कर बाहर आने की जी तोड़ कोशिश कर रहा था। मिक्की मेरी गोद में बैठी थी। हमारे होंठ आपस में चिपके हुए थे। मिक्की ने अपनी जीभ मेरे मुंह में डाल दी और मैं उसे रसभरी कुल्फी की तरह चूसने लगा। मेरा लंड उसकी नाज़ुक नितम्बों की खाई के बीच अपना सिर फोड़ता हुआ बेबस नज़र आ रहा था। मैं कभी मिक्की के गालों को चूमता कभी होंठो को कभी नाक को कभी उसके

कानो को और कभी पलकों को। मिक्की मेरे सीने से छिपाते हुए मुझे बाहों में जकड़े गोद में ऐसे बैठी थी जैसे अगर थोड़ा भी उसका बंधन ढीला हुआ तो उसके आगोश से उसका ख्वाब कोई छीन कर ले जायेगा। कमोबेश मेरी भी यही हालत थी।

कोई १०-१५ मिनट के बाद जब हमारी पकड़ कुछ ढीली हुई तो मिक्की को अपने बदन पर नाइटी न होने का भान हुआ। उसने हैरानी से इधर उधर देखा और फिर मेरी गोद से थोड़ा सा छिटक कर मारे शर्म के अपने हाथ अपनी आँखों पर रख लिए। नाइटी तो कब की शहीद होकर एक कोने में दुबकी पड़ी थी जैसे मरी हुई चिड़िया।

"मेरी नाइटी?"

"मेरी प्रियतमा, आँखें खोलो !"

"नहीं पहले मेरी नाइटी दो, मुझे शर्म आ रही है !"

"अरे मेरी बिल्लो रानी ! अब शर्म छोड़ो ! तुम इस ब्रा पेंटी में कितनी खूबसूरत लग रही हो जरा मेरी आँखों से देखो तो सही अपने आपको ! तुम यही तो दिखाने आई थी ना !"

"नहीं पहले लाईट बंद करो !"

"लाइट बंद करके मैं कैसे रसपान करूंगा तुम्हारी इस नायाब सुन्दरता का, यौवन का !"

"जिज्जू ! प्लीज़ ! मुझे शर्म आ रही है !"

मैंने न चाहते हुए भी उठ कर लाईट बंद कर दी पर बाथरूम का दरवाजा

खोल दिया जिसमे से हलकी रोशनी आ रही थी।

"अब तो आँखे खोल दो मेरी प्रियतमा !"

"नहीं पहले खिड़की का पर्दा करो !"

"क्यों वह कौन है ?"

"अरे वह मेरे मामाजी खड़े है जो हमारी रासलीला देख रहे हैं।"

"मामाजी ? कौन मामाजी ?" मैंने हैरानी से पूछा।

"ओफ्फ ओ !! आप भी निरे घोंचू है अरे बाबा ! चन्दा मामा !"

मेरी बेतहाशा हंसी निकल गई। बाहर एकम का चाँद खिड़की के बाहर हमारे प्यार का साक्षी बना अपनी दूधिया रोशनी बिखेर रहा था।

मैंने उसे बिस्तर पर लिटा लिया और खुद उसकी बगल में लेट कर अपनी एक टाँग उसकी जाँघों पर रख ली और उसके चेहरे पर झुक कर उसे चूमने लगा। मेरा एक हाथ उसके गाल पर था और दूसरा उसके बालों, लगे और कन्धे को सहला रहा था। मेरी जीभ उसके मुख के अनदर मुआयना कर रही थी। अब वो भी अपनी जीभ मेरी जीभ से टकरा टकरा कर मस्ती ले रही थी।

धीरे धीरे मेरा हाथ उसके यौवन कपोतों पर आ गया, वो जैसे सिहर सी गई, उसने मेरी आँखों में झांका और मेरा हाथ उसके कंधे से ब्रा की पट्टी को बाजू पर सरकाने लगा। मेरी उंगलियां उसकी ब्रा के कप में घुस गई और उसके तने हुए चूचुक से जा टकराई। मैंने उसके स्तनाग्र को दो उंगलियों में लेकर हल्के से मसला वो सीत्कार उठी।

फ़िर मेरा हाथ उसकी पीठ पर सरकता हुआ उसकी ब्रा के हुक तक पहुँच गया और हुक खुलते ही मैं ब्रा को उसके बदन से अलग करने की कोशिश करने लगा तो मिक्की जैसे तन्द्रा से जागी और अपनी सम्भालने लगी। लेकिन तब तक तो उसकी ब्रा मेरे हाथ में झूलने लगी थी और मिक्की फ़िर से मेरी आँखों में आँखें डाल कर मानो पूछ रही थी कि "यह क्या हो रहा है?"

काले रंग की ब्रा जैसे ही हटी, दोनों कबूतर ऐसे तन कर खड़े हो गए जैसे बरसों के बाद उन्हें आजादी मिली हो। छोटे नागपुरी संतरों की साइज़ के दो गोल गोल रस्कूप मेरे सामने थे। बादामी और थोड़ी गुलाबी रंगत लिए उसके एरोला कोई एक रुपये के सिक्के से बड़े तो नहीं थे। अनार के दाने जीतनी सुर्ख लाल रंग की छोटी सी घुंडी। आह्ह्ह...।।

मैंने तड़ से एक चुम्बन उस पर ले ही लिया। मिक्की सिहर उठी। पहले मैंने उनपर होले से जीभ फिराई और अब मैंने अपने आप को पूरी तरह से मिक्की के ऊपर लाकर उसके गोरे, चिकने बदन को अपने बदन से ढक दिया और उसके एक चूचुक को होठों में दबा कर जैसे उसमें से दूध पीने का प्रयत्न करने लगा। मेरा लण्ड उसकी जांघों के बीच में अपनी जगह बनाने की कोशिश कर रहा था।

और बाद में मैंने एक संतरा पूरे का पूरा अपने मुंह में ले लिया और चूसने लगा। मिक्की की सिसकारियां गूंजने लगी। मेरा एक हाथ उसकी पीठ और गोल गोल नितम्बों पर घूम रहा था। और दूसरे हाथ से उसका दूसरा स्तन दबा रहा था। मैंने जानबूझ कर उसकी बुर पर हाथ नहीं फेरा था इसका कारण मैं आपको बाद में बताऊंगा।

मेरे दस मिनट तक चूसने के कारण उसके उरोज साइज़ में कोई दो इंच तो जरूर बढ़ गए थे और निप्पल्स तो पेंसिल की नोक की तरह एकदम तीखे हो गए। मैंने उसे बेड पर लिटा दिया। उसका एक हाथ थोड़ा सा ऊपर उठा हुआ था। उसकी कांख में उगे सुनहरे रंग के रोएँ देख कर मैं अपने आप को रोक नहीं पाया और अपना मुंह वहाँ पर टिका दिया। हालांकि वो नहा कर आई थी पर उसके उभरते यौवन की उस खट्टी, मीठी, नमकीन सी खुशबू से मेरा स्नायु तंत्र एक मादक महक से भर उठा। मैंने जब जीभ से चाटा तो मिक्की उतेजना और गुदगुदी से रोमांचित हो उठी।

अब मैंने पहले उसके गालों पर आई बालो की आवारा लट को हटा कर उसका चेहरा अपनी हथेलियों में ले लिया। थरथराते होंठो से उसके माथे को, फिर आँखों की पलकों को, कपोलों को, उसकी नासिका, उसके कानों की लोब और अधरों को चूमता चला गया। मिक्की पलकें बंद किये सपनों की दुनिया में खोई हुई थी। उसकी साँसे तेज चल रही थी होंठ कंपकपा रहे थे। मैंने उसके गले और फिर उसके बूब्स को चूमा। दोनों उरोजों की घाटी में अपनी जीभ लगा कर चाटा तो मिक्की के होंठो से बस एक हलकी सी कामरस में भीगी सित्कार निकल गई। हालांकि रौशनी में चमकता उसका चिकना सफ्फाक बदन मेरे सामने सब कुछ लुटाने के लिए बिखरा पड़ा था।

अचानक उसे ध्यान आया कि मैं तो पूरे कपड़े पहने हुए हूँ, उसने मुझे उलाहना देते हुए कहा "अच्छा जी आपने तो अपने कपड़े उतारे ही नहीं !"

मैं तो इसी ताक में था। दरअसल मैंने अपने कपड़े पहले इस लिए नहीं

उतारे थे कि कहीं मिक्की मेरा सात इंच का फनफनाता हुआ लंड देखकर डर न जाए और ये न सोचे कि मैं जबरन कुछ कर देने पर तुला हुआ हूँ या कहीं उसका बलात्कार ही तो नहीं करना चाहता। कपड़े उतार कर मैं डबल बेड पर सिरहाने की ओर कमर टिका कर बैठ गया। मेरी एक टांग सीधी थी और दूसरी कुछ मुड़ी हुई जिसकी जांघ पर मिक्की अपना सिर रखे आँखें बंद किये लेटी थी। मैंने नीचे झुक कर उसका चुम्बन लेने की कोशिश की तो वो थोड़ा सा नीचे की ओर घूम गई। मेरा आधा लंड चड्डी के बाहर निकला हुआ था वो उसके होंठों से लग गया। मुझे तो मन मांगी मुराद मिल गई।

मैंने उसे कहा- मिक्की देखो इसे कैसे मुंह उठाए तुम्हें देख रहा है ! हाथ में लो ना इसे !

अगला और शायद अन्तिम भाग भी जल्दी ही आपके सामने होगा।